



Ratna Jyoti

An ISO Certified Company
GSTIN:-19ADBPN6598G1Z1

OUR
EXPERIENCE
YOU CAN TRUST



Sample

30 Aug 1988

10:00 AM

Delhi

Model: Web-2YearPredictionPack

SrNo: 101-111-105-1030 / 295

Phone: +91-341-2668022
Mobile : +91 -9732150484
Whatsapp : +91 -9732150484



RATNA JYOTI®

Website: <https://www.ratnajyoti.com/>
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan ,W.B , India ,Zip-713322

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 30/08/1988
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 10:00:00 घंटे
इष्ट _____: 10:04:32 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 09:38:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:00:36 घंटे
साम्पातिक काल _____: 08:13:13 घंटे
सूर्योदय _____: 05:58:11 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:44:43 घंटे
दिनमान _____: 12:46:32 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 13:19:12 सिंह
लग्न के अंश _____: 05:27:33 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: रेवती - 2
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: गण्ड
करण _____: बव
गण _____: देव
योनि _____: गज
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सर्प
चुँजा _____: पूर्व
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: दो-दौलत
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या



पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1910	भाद्रपद	8
पंजाबी	संवत : 2045	भाद्रपद	15
बंगाली	सन् : 1395	भाद्रपद	14
तमिल	संवत : 2045	आवनी	15
केरल	कोल्लम : 1164	चिंगम	14
नेपाली	संवत : 2045	भाद्रपद	15
चैत्रादि	संवत : 2045	भाद्रपद	कृष्ण 4
कार्तिकादि	संवत : 2045	श्रावण	कृष्ण 4

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 4
तिथि समाप्ति काल _____ : 26:42:00
जन्म तिथि _____ : 4
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 23:24:11 घंटे
जन्म योग _____ : रेवती
सूर्योदय कालीन योग _____ : गण्ड
योग समाप्ति काल _____ : 22:35:17 घंटे
जन्म योग _____ : गण्ड
सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
करण समाप्ति काल _____ : 16:06:28 घंटे
जन्म करण _____ : बव
भयात _____ : 20:55:51
भभोग _____ : 54:26:16
भोग्य दशा काल _____ : बुध 10 वर्ष 5 मा 1 दि

घात चक्र

मास _____ : फाल्गुन
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : आश्लेषा
योग _____ : वज्र
करण _____ : चतुष्पाद
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : सिंह
सूर्य _____ : मिथुन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : कर्क
बुध _____ : कुम्भ
गुरु _____ : सिंह
शुक्र _____ : कन्या
शनि _____ : वृष
राहु _____ : तुला



जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

गु		मं चं
शु		रा
सू के	ल	श
बु		

चन्द्र कुण्डली

गु		चं ल	मं
शु		रा	
सू के	ल	श	
बु			

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

मं चं		गु	शु
रा			
			के सू
श		ल	बु

लग्न कुण्डली

	गु		मं चं
शु			रा
सू के		ल	श

विंशोत्तरी
बुध 10वर्ष 5मा 1दि
बुध

30/08/1988

01/02/2102

बुध	31/01/1999
केतु	31/01/2006
शुक्र	31/01/2026
सूर्य	31/01/2032
चन्द्र	31/01/2042
मंगल	30/01/2049
राहु	31/01/2067
गुरु	31/01/2083
शनि	01/02/2102

योगिनी
उल्का 3वर्ष 8मा 4दि
भद्रिका

04/05/2017

05/05/2022

भद्रिका	13/01/2018
उल्का	13/11/2018
सिद्धा	04/11/2019
संकटा	13/12/2020
मंगला	02/02/2021
पिंगला	15/05/2021
धान्या	14/10/2021
भामरी	05/05/2022



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	05:27:33	312:21:30	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	सूर्य	---
सूर्य			सिंह	13:19:12	00:58:00	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	मूलत्रिकोण
चंद्र			मीन	21:49:38	14:44:07	रेवती	2	27	गुरु	बुध	सूर्य	सम राशि
मंगल	व		मीन	17:40:25	00:03:02	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	मित्र राशि
बुध			कन्या	05:20:07	01:27:43	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	उच्च राशि
गुरु			वृष	11:22:54	00:04:50	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	मंगल	शत्रु राशि
शुक्र			मिथु	27:43:05	01:00:40	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
शनि	व		धनु	02:13:44	00:00:01	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	सम राशि
राहु			कुंभ	20:23:00	00:00:23	पूर्वाषाढा	1	25	शनि	गुरु	गुरु	मित्र राशि
केतु			सिंह	20:23:00	00:00:23	पूर्वाषाढा	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष	व		धनु	03:21:37	00:00:19	मूल	2	19	गुरु	केतु	सूर्य	---
नेप	व		धनु	13:49:23	00:00:37	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लूटो			तुला	16:31:54	00:01:21	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
दशम भाव			कर्क	07:22:48	--	पुष्य	--	8	चंद्र	शनि	केतु	--

व - वकी स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:42:00

लग्न-चलित

गु		मं
+शु		+चं
		रा
सू		श
के	ल	
बु		

चन्द्र कुंडली

गु		चं	मं
शु		ल	रा
			श
सू			
के	बु		

नवमांश कुंडली

	रा	
शु	गु	बु
	श	
		चं
सू		मं
	के	ल



RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 20:46:45	तुला 05:27:33
2	तुला 20:46:45	वृश्चिक 06:05:58
3	वृश्चिक 21:25:10	धनु 06:44:23
4	धनु 22:03:36	मकर 07:22:48
5	मकर 22:03:36	कुम्भ 06:44:23
6	कुम्भ 21:25:10	मीन 06:05:58
7	मीन 20:46:45	मेष 05:27:33
8	मेष 20:46:45	वृष 06:05:58
9	वृष 21:25:10	मिथुन 06:44:23
10	मिथुन 22:03:36	कर्क 07:22:48
11	कर्क 22:03:36	सिंह 06:44:23
12	सिंह 21:25:10	कन्या 06:05:58

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	05:27:33
2	वृश्चिक	04:19:51
3	धनु	05:08:31
4	मकर	07:22:48
5	कुम्भ	09:34:27
6	मीन	09:24:38
7	मेष	05:27:33
8	वृष	04:19:51
9	मिथुन	05:08:31
10	कर्क	07:22:48
11	सिंह	09:34:27
12	कन्या	09:24:38

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली

गु	चं	मं
शु		रा
सू	ल	श
के		बु

भाव कुंडली

गु	चं	मं
शु	7	6
10		रा
		5
सू	11	4
के		3
	12	श
	1	2



RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

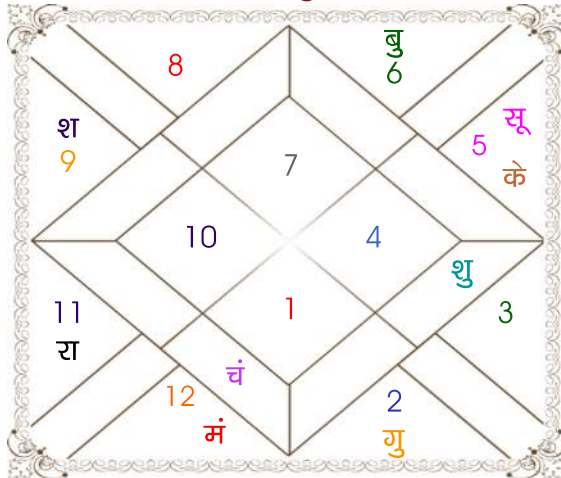
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----		----- अवस्था -----			रश्मि	ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि		
सूर्य	मातृ	पितृ	युवा	स्वस्थ	निद्रा	6.30	58 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	कुमार	शक्त	उपवेशन	8.33	75 %
मंगल	भातृ	भातृ	युवा	मुदित	उपवेशन	4.83	32 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	मृत	दीप्त	आगम	14.19	39 %
गुरु	पुत्र	धन	वृद्ध	खल	प्रकाश	4.91	64 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	मृत	मुदित	उपवेशन	5.29	56 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल	शक्त	भोजन	1.91	21 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	मुदित	प्रकाश	0.00	7 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	खल	गमन	0.00	7 %
कुल						45.77	

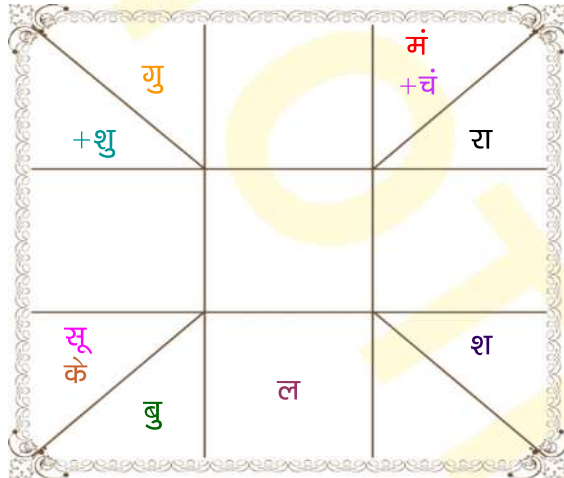
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली



लग्न-चलित



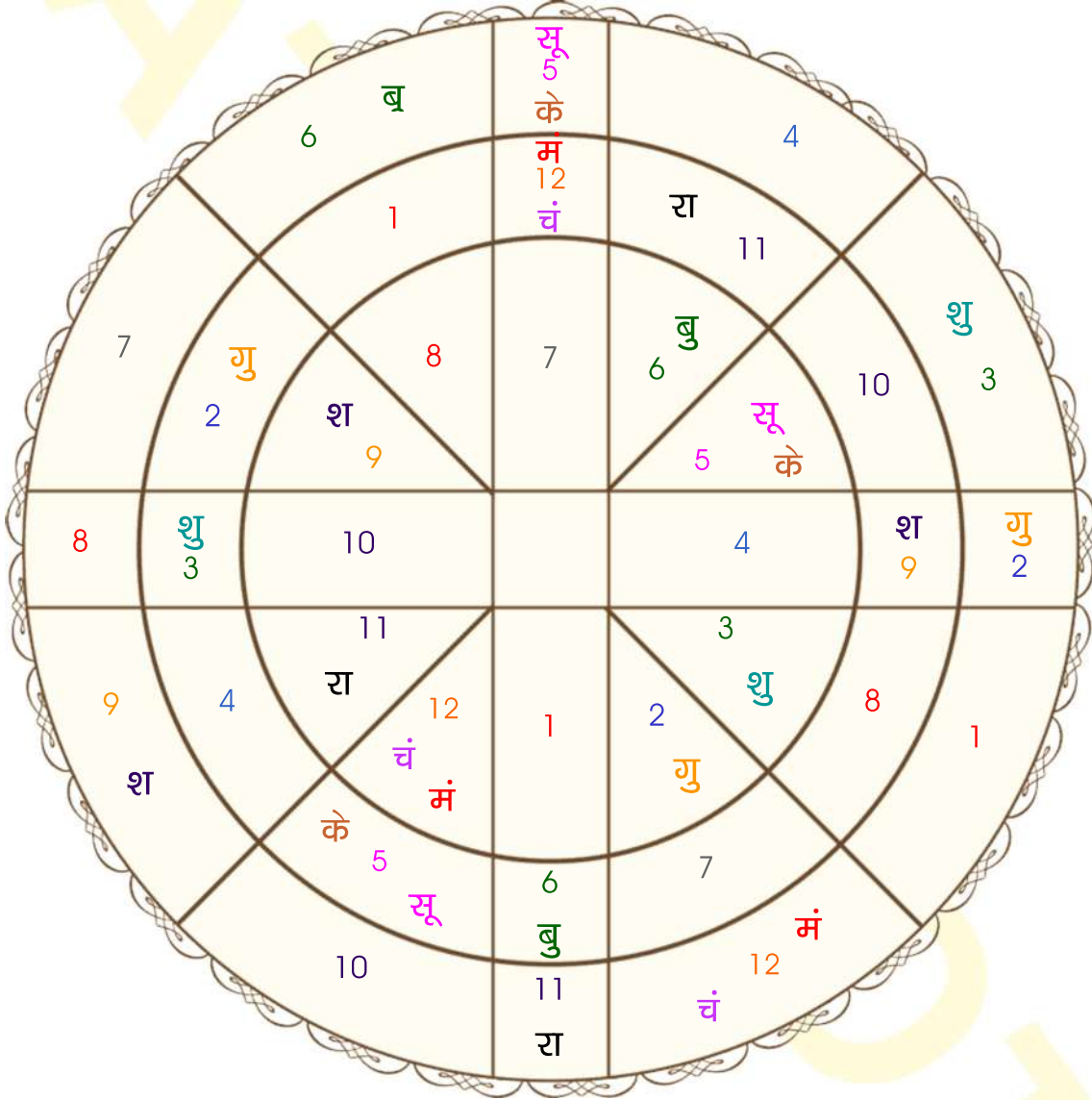
RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

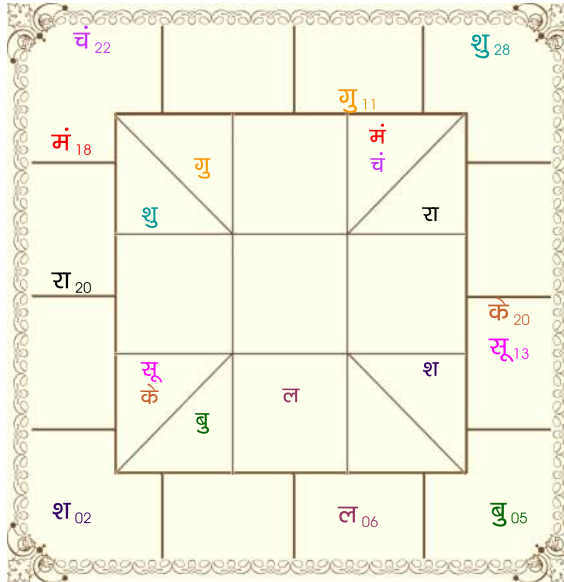
भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 3 मास 13 दिन

ग्रह					निरयण भाव				
ग्रह	व	राशि	अंश	रा न अं. प्र.	भाव	राशि	अंश	रा न अं. प्र.	
सूर्य		सिंह	13:25:29	सूर्य शुक्र शुक्र शुक्र	1	तुला	05:33:50	शुक्र मंगलचंद्र चंद्र	
चंद्र		मीन	21:55:55	गुरु बुध सूर्य शनि	2	वृश्चि	04:26:08	मंगलशनि शनि शुक्र	
मंगलव		मीन	17:46:43	गुरु बुध बुध राहु	3	धनु	05:14:48	गुरु केतु मंगलबुध	
बुध		कन्या	05:26:25	बुध सूर्य बुध केतु	4	मक	07:29:05	शनि सूर्य केतु गुरु	
गुरु		वृष	11:29:11	शुक्र चंद्र मंगलशनि	5	कुंभ	09:40:44	शनि राहु गुरु शुक्र	
शुक्र		मिथु	27:49:23	बुध गुरु शुक्र गुरु	6	मीन	09:30:55	गुरु शनि शुक्र गुरु	
शनि	व	धनु	02:20:02	गुरु केतु शुक्र शनि	7	मेष	05:33:50	मंगलकेतु राहु राहु	
राहु		कुंभ	20:29:17	शनि गुरु गुरु शनि	8	वृष	04:26:08	शुक्र सूर्य शनि मंगल	
केतु		सिंह	20:29:17	सूर्य शुक्र गुरु शनि	9	मिथु	05:14:48	बुध मंगलसूर्य शनि	
हर्ष	व	धनु	03:27:54	गुरु केतु सूर्य बुध	10	कर्क	07:29:05	चंद्र शनि केतु शुक्र	
नेप	व	धनु	13:55:40	गुरु शुक्र शुक्र चंद्र	11	सिंह	09:40:44	सूर्य केतु शनि बुध	
प्लूटो		तुला	16:38:11	शुक्र राहु शुक्र गुरु	12	कन्या	09:30:55	बुध सूर्य शुक्र शनि	

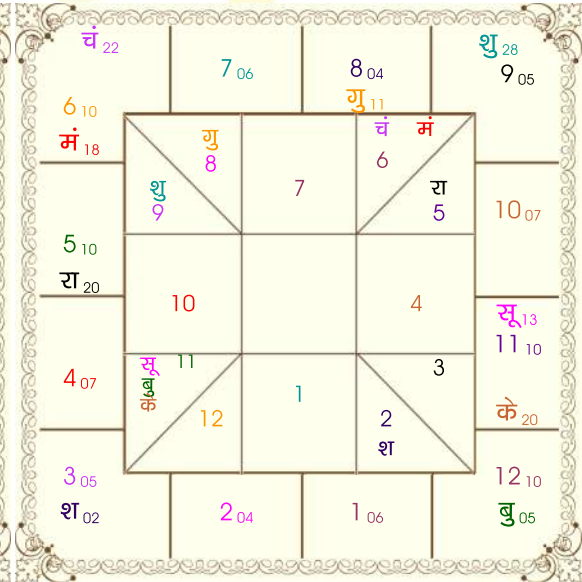
के.पी. अयनांश : 23:35:43

फॉरच्युना : वृष 14:04:16

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- शुक्र- केतु-
2	मंगल- शनि,
3	गुरु- शुक्र- राहु-
4	शनि-
5	शनि- राहु,
6	चंद्र, मंगल, गुरु+ शुक्र- राहु-
7	मंगल-
8	सूर्य- गुरु, शुक्र+ राहु, केतु-
9	सूर्य, चंद्र- मंगल- बुध- शुक्र, केतु,
10	चंद्र- गुरु-
11	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध+ शनि, केतु,
12	चंद्र- मंगल- बुध-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 8- 9, 11,
चंद्र	6, 9- 10- 11, 12-
मंगल	2- 6, 7- 9- 11, 12-
बुध	9- 11+ 12-
गुरु	3- 6+ 8, 10-
शुक्र	1- 3- 6- 8+ 9,
शनि	2, 4- 5- 11,
राहु	3- 5, 6- 8,
केतु	1- 8- 9, 11,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	चन्द्र
राशि अन्तर स्वामी	सूर्य



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

गु	मं चं
शु	रा
सू के	ल श
बु	

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

गु	चं मं
शु	रा
सू के	ल श
बु	

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

गु	मं चं
शु	रा
सू के	ल श
बु	

देह विचारः

होरा कुंडली

के	गु
बु	रा
सू के	ल श
म	

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

	के	शु
मं		
बु गु	ल रा	सू श चं

भातृसौख्यम्

चतुर्थाश कुंडली

		शु
		के
गु रा	चं मं	ल श सू

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

बु		शु
गु		के रा
चं	ल श	सू

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

ल	श	चं
सू		मं
रा के	शु	गु बु

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

रा	बु	चं
		गु मं
	शु ल सू	श के

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

के	रा ल	गु सू
		चं
श	बु	मं

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

शु	रा गु श	बु
सू		चं
	के	ल मं

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

बु चं	गु मं	शु के
रा		सू श ल

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

	सू	
के गु		रा चं
श		ल बु शु मं

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

शु	के	
		सू
गु	मं रा	ल श चं बु

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

के रा	ल	सू शु बु गु
		श
मं		चं

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

		शु
गु ल मं		के रा
सू	श	चं बु

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशति कुंडली

शु सू	गु	
मं श		ल वं रा के

विद्याविचारः

सप्तविंशति कुंडली

गु	रा मं	सू
श		ल
चं	शु के	बु

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशति कुंडली

के रा	श	मं ल
		चं
बु गु	शु	सू

अरिष्टज्ञानम्

अष्टविंशति कुंडली

बु	शु	चं
श		गु
के रा		ल

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षविंशति कुंडली

शु		श सू के रा
		मं
चं बु		गु

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

	श	गु
रा		मं
बु		शु

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	तुला	सिंह	मीन	मीन	कन्या	वृष	मिथु	धनु	कुंभ	सिंह
होरा	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	तुला	धनु	वृश्चि	कर्क	कन्या	कन्या	कुंभ	धनु	तुला	मेष
चतुर्थांश	तुला	वृश्चि	कन्या	कन्या	कन्या	सिंह	मीन	धनु	सिंह	कुंभ
सप्तमांश	वृश्चि	वृश्चि	कुंभ	मक	मेष	मक	धनु	धनु	मिथु	धनु
नवमांश	वृश्चि	कर्क	मक	धनु	कुंभ	मेष	मिथु	मेष	मेष	तुला
दशमांश	वृश्चि	धनु	मिथु	मेष	मिथु	मेष	मीन	धनु	सिंह	कुंभ
द्वादशांश	धनु	मक	वृश्चि	तुला	वृश्चि	कन्या	वृष	धनु	तुला	मेष
षोडशांश	मिथु	मीन	वृश्चि	कन्या	कुंभ	कुंभ	कुंभ	मक	मिथु	मिथु
विंशांश	कर्क	सिंह	तुला	कर्क	वृश्चि	कर्क	कुंभ	कन्या	मक	मक
चतुर्विंशांश	धनु	मिथु	धनु	कन्या	वृश्चि	मेष	मिथु	कन्या	धनु	धनु
सप्तविंशांश	कुंभ	मीन	सिंह	मेष	वृश्चि	वृष	तुला	मिथु	मेष	तुला
त्रिंशांश	कुंभ	धनु	मक	मीन	कन्या	कन्या	तुला	मेष	मिथु	मिथु
ख्रवेदांश	वृश्चि	कन्या	मीन	कन्या	वृष	मक	मेष	मिथु	कर्क	कर्क
अक्षवेदांश	धनु	मीन	सिंह	कुंभ	सिंह	मक	वृष	मीन	कुंभ	कुंभ
षष्ट्यंश	सिंह	तुला	तुला	कुंभ	कर्क	मीन	मक	मेष	मिथु	धनु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
चन्द्र	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
मंगल	0 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
बुध	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	5 कन्दुक
गुरु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल
शनि	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
राहु	1 ---	2 किंसुक	4 गोपुर	4 नागपुष्प
केतु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	15.50	12.10	15.30	15.95	11.05	15.90	7.70	12.25	10.25
सप्तवर्ग	14.60	12.50	15.33	14.45	10.73	15.93	7.63	11.48	10.93
दशवर्ग	14.28	12.45	14.78	12.43	12.73	14.05	9.03	9.40	11.48
षोडशवर्ग	14.83	12.85	14.00	13.28	13.25	14.55	10.50	10.55	11.65



RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	सम	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	सम	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---



RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	19	46	43	57	42	30	46
सप्तवर्गज बल	137	75	113	129	62	135	32
ओजयुग्मक बल	15	30	15	15	15	0	30
केन्द्र बल	30	15	15	15	30	15	15
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	0	15	0
कुल स्थान बल	201	181	186	216	149	195	123
कुल दिग्बल	48	35	23	50	12	3	19
नतोन्नत बल	48	12	12	60	48	48	12
पक्ष बल	13	94	13	47	47	47	13
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	83	22	36	31	57	58	60
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	144	188	121	198	243	153	85
कुल चेष्टाबल	0	0	54	23	34	35	36
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	8	-2	-2	-3	-2	-12	17
कुल षट्बल	461	454	399	510	469	417	288
रूप षट्बल	7.7	7.6	6.7	8.5	7.8	7.0	4.8
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.5	1.3	1.3	1.2	1.2	1.3	1.0
संबंधित पद	1	4	2	5	6	3	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	26.67	46.72	48.36	36.35	37.58	32.39	40.74
कष्ट फल	30.30	13.27	10.10	10.88	21.75	27.35	18.33

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	417	399	469	288	288	469	399	417	510	454	461	510
भावदिग्बल	60	10	40	0	20	40	30	40	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	44	58	88	72	32	46	33	23	-2	-1	36	22
कुल भाव बल	521	467	597	360	340	555	462	480	528	454	547	582
रूप भाव बल	8.7	7.8	10.0	6.0	5.7	9.2	7.7	8.0	8.8	7.6	9.1	9.7
संबंधित पद	6	8	1	11	12	3	9	7	5	10	4	2



RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	तुला	05:27:33	--	--	चित्रा	4	14
गुलिक	गु	वृश्चि	26:29:05	--	--	ज्येष्ठा	3	18
काल	का	धनु	18:42:24	--	--	पूर्वाषाढ़ा	2	20
मृत्यु	मृ	कन्या	03:23:47	--	--	उ०फाल्गुनी	3	12
यमघंटक	यम	तुला	15:31:29	--	--	स्वाति	3	15
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कन्या	24:43:59	--	--	चित्रा	1	14
धूम	धू	धनु	26:39:12	--	--	पूर्वाषाढ़ा	4	20
व्यतिपात	व्य	कर्क	03:20:48	--	--	पुष्य	1	8
परिवेश	परि	मक	03:20:48	--	--	उत्तराषाढ़ा	3	21
इन्द्रचाप	इ	मिथु	26:39:12	नीच	--	पुनर्वसु	2	7
उपकेतु	उप	कर्क	13:19:12	--	मूल	पुष्य	3	8

प्राणपद	:	सिंह	22:22:13	कारकौश लग्न	:	मिथु	09:27:49
भाव लग्न	:	तुला	13:46:21	होरा लग्न	:	धनु	14:13:30
घटी लग्न	:	मिथु	15:34:57	वर्णद लग्न	:	मिथु	19:41:02

उपग्रह कुंडली

रु		
उप व्य		परि
मृ अर्द्ध	ल यम	का धू गु

आरूढ़ कुंडली

		कल ल
आयु धन शत्रु		
लाभ व्य	भा ल पुत्र	भा मातृ कर्म



RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग											चंद्र का अष्टकवर्ग																
शि	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कंकुल	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	कुल			
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8	शनि	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
गुरु	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	4	गुरु	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7	
मंगल	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8	मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	6	
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8	सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	6	
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3	शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	7	
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	7	बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8	
चंद्र	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4	चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7	
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6	लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4	
कुल	5	5	3	4	5	6	2	5	2	4	4	3	48	कुल	6	4	5	3	3	5	3	3	3	6	4	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग											बुध का अष्टकवर्ग																
मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	कुल	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल		
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	7	शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8	
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4	गुरु	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	4	
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7	मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8	
सूर्य	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	5	सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5	
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4	शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8	
बुध	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4	बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8	
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3	चंद्र	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	6	
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5	लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7	
कुल	4	3	3	3	3	3	2	5	2	4	5	2	39	कुल	4	6	3	5	7	2	4	5	2	6	5	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग											शुक्र का अष्टकवर्ग																
वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	कुल	मि	कं	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल		
शनि	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4	शनि	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7	
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	8	गुरु	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	5	
मंगल	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7	मंगल	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	6	
सूर्य	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	9	सूर्य	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3	
शुक्र	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6	शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9	
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	8	बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	5	
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	5	चंद्र	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	9	
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9	लग्न	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8	
कुल	4	5	5	3	4	5	6	3	4	6	5	6	56	कुल	5	5	4	3	4	4	2	6	7	5	3	4	52

शनि का अष्टकवर्ग											लग्न का अष्टकवर्ग																
ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृ	कुल	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	कुल		
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4	शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6	
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4	गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9	
मंगल	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6	मंगल	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5	
सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7	सूर्य	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6	
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3	शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	7	
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	6	बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7	
चंद्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3	चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5	
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6	लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4	
कुल	2	3	4	3	4	6	2	3	5	2	3	2	39	कुल	5	2	5	5	5	4	1	5	4	4	5	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	वु	वृशि	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	6	2	3	5	2	3	2	2	3	4	3	39
गुरु	6	4	5	5	3	4	5	6	3	4	6	5	56
मंगल	3	3	3	3	3	2	5	2	4	5	2	4	39
सूर्य	2	4	4	3	5	5	3	4	5	6	2	5	48
शुक्र	3	4	5	5	4	3	4	4	2	6	7	5	52
बुध	5	2	6	5	5	4	6	3	5	7	2	4	54
चंद्र	4	5	3	3	5	3	3	3	6	4	4	6	49
बिन्दु	27	28	28	27	30	23	29	24	27	35	27	32	337
रेखा	29	28	28	29	26	33	27	32	29	21	29	24	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	वु	वृशि	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	4	0	1	3	0	1	0	0	1	2	1	15
गुरु	3	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	5
मंगल	0	1	1	1	0	0	3	0	1	3	0	2	12
सूर्य	0	0	2	0	3	1	1	1	3	2	0	2	15
शुक्र	1	1	1	1	2	0	0	0	0	3	3	1	13
बुध	0	0	4	2	0	2	4	0	0	5	0	1	18
चंद्र	0	2	0	0	1	0	0	0	2	1	1	3	10
रेखा	6	8	8	5	9	3	9	2	6	15	7	10	88

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	वु	वृशि	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	4	0	1	3	0	0	0	0	1	1	1	13
गुरु	2	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
मंगल	0	1	1	1	0	0	2	0	1	3	0	2	11
सूर्य	0	0	2	0	3	1	1	1	3	2	0	2	15
शुक्र	1	1	1	1	2	0	0	0	0	0	0	1	7
बुध	0	0	4	2	0	2	4	0	0	5	0	1	18
चंद्र	0	2	0	0	1	0	0	0	2	0	0	3	8
रेखा	5	8	8	5	9	3	7	2	6	11	2	10	76

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	127	84	84	115	33	61	116
ग्रह पिंड	75	74	48	51	0	40	68
शोध्य पिंड	202	158	132	166	33	101	184



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

सूर्य का अष्टकवर्ग

4	2	5
4		2
3		6
5	ल 3	5
5		4

28	27	32
28		27
27		35
30	ल 29	27
23		24

चंद्र का अष्टकवर्ग

5	4	6
3		4
3		4
5	ल 3	6
3		3

मंगल का अष्टकवर्ग

3	3	4
3		2
3		5
3	ल 5	4
2		2

बुध का अष्टकवर्ग

2	5	4
6		2
5		7
5	ल 6	5
4		3

गुरु का अष्टकवर्ग

4	6	5
5		6
5		4
3	ल 5	3
4		6

शुक्र का अष्टकवर्ग

4	3	5
5		7
5		6
4	ल 4	2
3		4

शनि का अष्टकवर्ग

6	4	3
2		4
3		3
5	ल 3	2
2		2

लग्न का अष्टकवर्ग

5	1	4
4		5
4		5
5	ल 5	5
4		2



RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 5 मास 1 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
30/08/1988	31/01/1999	31/01/2006	31/01/2026	31/01/2032
31/01/1999	31/01/2006	31/01/2026	31/01/2032	31/01/2042
00/00/0000	केतु 29/06/1999	शुक्र 01/06/2009	सूर्य 20/05/2026	चंद्र 01/12/2032
00/00/0000	शुक्र 28/08/2000	सूर्य 01/06/2010	चंद्र 19/11/2026	मंगल 02/07/2033
30/08/1988	सूर्य 03/01/2001	चंद्र 31/01/2012	मंगल 27/03/2027	राहु 31/12/2034
सूर्य 02/03/1989	चंद्र 04/08/2001	मंगल 01/04/2013	राहु 18/02/2028	गुरु 01/05/2036
चंद्र 01/08/1990	मंगल 31/12/2001	राहु 01/04/2016	गुरु 07/12/2028	शनि 01/12/2037
मंगल 30/07/1991	राहु 19/01/2003	गुरु 01/12/2018	शनि 19/11/2029	बुध 02/05/2039
राहु 15/02/1994	गुरु 26/12/2003	शनि 31/01/2022	बुध 25/09/2030	केतु 01/12/2039
गुरु 23/05/1996	शनि 02/02/2005	बुध 01/12/2024	केतु 31/01/2031	शुक्र 01/08/2041
शनि 31/01/1999	बुध 31/01/2006	केतु 31/01/2026	शुक्र 31/01/2032	सूर्य 31/01/2042

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
31/01/2042	30/01/2049	31/01/2067	31/01/2083	01/02/2102
30/01/2049	31/01/2067	31/01/2083	01/02/2102	00/00/0000
मंगल 29/06/2042	राहु 14/10/2051	गुरु 20/03/2069	शनि 03/02/2086	बुध 29/06/2104
राहु 17/07/2043	गुरु 08/03/2054	शनि 01/10/2071	बुध 13/10/2088	केतु 27/06/2105
गुरु 22/06/2044	शनि 12/01/2057	बुध 06/01/2074	केतु 22/11/2089	शुक्र 26/04/2108
शनि 01/08/2045	बुध 02/08/2059	केतु 13/12/2074	शुक्र 21/01/2093	सूर्य 31/08/2108
बुध 29/07/2046	केतु 19/08/2060	शुक्र 13/08/2077	सूर्य 03/01/2094	00/00/0000
केतु 25/12/2046	शुक्र 20/08/2063	सूर्य 01/06/2078	चंद्र 05/08/2095	00/00/0000
शुक्र 25/02/2048	सूर्य 14/07/2064	चंद्र 01/10/2079	मंगल 12/09/2096	00/00/0000
सूर्य 01/07/2048	चंद्र 12/01/2066	मंगल 06/09/2080	राहु 20/07/2099	00/00/0000
चंद्र 30/01/2049	मंगल 31/01/2067	राहु 31/01/2083	गुरु 01/02/2102	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 10 वर्ष 5 मा 17 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य	बुध - चंद्र	बुध - मंगल	बुध - राहु	बुध - गुरु
30/08/1988	02/03/1989	01/08/1990	30/07/1991	15/02/1994
02/03/1989	01/08/1990	30/07/1991	15/02/1994	23/05/1996
00/00/0000	चंद्र 14/04/1989	मंगल 22/08/1990	राहु 16/12/1991	गुरु 05/06/1994
00/00/0000	मंगल 14/05/1989	राहु 16/10/1990	गुरु 18/04/1992	शनि 14/10/1994
00/00/0000	राहु 31/07/1989	गुरु 03/12/1990	शनि 13/09/1992	बुध 09/02/1995
30/08/1988	गुरु 08/10/1989	शनि 29/01/1991	बुध 23/01/1993	केतु 29/03/1995
गुरु 20/09/1988	शनि 29/12/1989	बुध 22/03/1991	केतु 18/03/1993	शुक्र 14/08/1995
शनि 08/11/1988	बुध 12/03/1990	केतु 12/04/1991	शुक्र 20/08/1993	सूर्य 24/09/1995
बुध 22/12/1988	केतु 11/04/1990	शुक्र 11/06/1991	सूर्य 06/10/1993	चंद्र 02/12/1995
केतु 09/01/1989	शुक्र 06/07/1990	सूर्य 29/06/1991	चंद्र 23/12/1993	मंगल 20/01/1996
शुक्र 02/03/1989	सूर्य 01/08/1990	चंद्र 30/07/1991	मंगल 15/02/1994	राहु 23/05/1996

बुध - शनि	केतु - केतु	केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - चंद्र
23/05/1996	31/01/1999	29/06/1999	28/08/2000	03/01/2001
31/01/1999	29/06/1999	28/08/2000	03/01/2001	04/08/2001
शनि 25/10/1996	केतु 09/02/1999	शुक्र 08/09/1999	सूर्य 04/09/2000	चंद्र 21/01/2001
बुध 14/03/1997	शुक्र 05/03/1999	सूर्य 29/09/1999	चंद्र 14/09/2000	मंगल 02/02/2001
केतु 10/05/1997	सूर्य 13/03/1999	चंद्र 04/11/1999	मंगल 22/09/2000	राहु 06/03/2001
शुक्र 21/10/1997	चंद्र 25/03/1999	मंगल 29/11/1999	राहु 11/10/2000	गुरु 04/04/2001
सूर्य 09/12/1997	मंगल 03/04/1999	राहु 01/02/2000	गुरु 28/10/2000	शनि 07/05/2001
चंद्र 01/03/1998	राहु 25/04/1999	गुरु 28/03/2000	शनि 17/11/2000	बुध 06/06/2001
मंगल 27/04/1998	गुरु 15/05/1999	शनि 04/06/2000	बुध 05/12/2000	केतु 19/06/2001
राहु 22/09/1998	शनि 08/06/1999	बुध 03/08/2000	केतु 13/12/2000	शुक्र 24/07/2001
गुरु 31/01/1999	बुध 29/06/1999	केतु 28/08/2000	शुक्र 03/01/2001	सूर्य 04/08/2001

केतु - मंगल	केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि	केतु - बुध
04/08/2001	31/12/2001	19/01/2003	26/12/2003	02/02/2005
31/12/2001	19/01/2003	26/12/2003	02/02/2005	31/01/2006
मंगल 13/08/2001	राहु 27/02/2002	गुरु 05/03/2003	शनि 28/02/2004	बुध 26/03/2005
राहु 04/09/2001	गुरु 19/04/2002	शनि 28/04/2003	बुध 25/04/2004	केतु 16/04/2005
गुरु 24/09/2001	शनि 19/06/2002	बुध 15/06/2003	केतु 19/05/2004	शुक्र 15/06/2005
शनि 18/10/2001	बुध 12/08/2002	केतु 05/07/2003	शुक्र 25/07/2004	सूर्य 03/07/2005
बुध 08/11/2001	केतु 03/09/2002	शुक्र 31/08/2003	सूर्य 14/08/2004	चंद्र 03/08/2005
केतु 16/11/2001	शुक्र 06/11/2002	सूर्य 17/09/2003	चंद्र 17/09/2004	मंगल 24/08/2005
शुक्र 11/12/2001	सूर्य 25/11/2002	चंद्र 16/10/2003	मंगल 11/10/2004	राहु 17/10/2005
सूर्य 19/12/2001	चंद्र 27/12/2002	मंगल 05/11/2003	राहु 10/12/2004	गुरु 04/12/2005
चंद्र 31/12/2001	मंगल 19/01/2003	राहु 26/12/2003	गुरु 02/02/2005	शनि 31/01/2006



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु
31/01/2006	01/06/2009	01/06/2010	31/01/2012	01/04/2013
01/06/2009	01/06/2010	31/01/2012	01/04/2013	01/04/2016
शुक्र 22/08/2006	सूर्य 19/06/2009	चंद्र 22/07/2010	मंगल 25/02/2012	राहु 13/09/2013
सूर्य 21/10/2006	चंद्र 20/07/2009	मंगल 27/08/2010	राहु 29/04/2012	गुरु 06/02/2014
चंद्र 31/01/2007	मंगल 10/08/2009	राहु 26/11/2010	गुरु 25/06/2012	शनि 29/07/2014
मंगल 12/04/2007	राहु 04/10/2009	गुरु 15/02/2011	शनि 31/08/2012	बुध 31/12/2014
राहु 12/10/2007	गुरु 22/11/2009	शनि 23/05/2011	बुध 31/10/2012	केतु 05/03/2015
गुरु 22/03/2008	शनि 18/01/2010	बुध 17/08/2011	केतु 24/11/2012	शुक्र 04/09/2015
शनि 01/10/2008	बुध 11/03/2010	केतु 21/09/2011	शुक्र 03/02/2013	सूर्य 29/10/2015
बुध 22/03/2009	केतु 02/04/2010	शुक्र 01/01/2012	सूर्य 25/02/2013	चंद्र 28/01/2016
केतु 01/06/2009	शुक्र 01/06/2010	सूर्य 31/01/2012	चंद्र 01/04/2013	मंगल 01/04/2016

शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि	शुक्र - बुध	शुक्र - केतु	सूर्य - सूर्य
01/04/2016	01/12/2018	31/01/2022	01/12/2024	31/01/2026
01/12/2018	31/01/2022	01/12/2024	31/01/2026	20/05/2026
गुरु 09/08/2016	शनि 02/06/2019	बुध 26/06/2022	केतु 25/12/2024	सूर्य 05/02/2026
शनि 10/01/2017	बुध 13/11/2019	केतु 26/08/2022	शुक्र 06/03/2025	चंद्र 14/02/2026
बुध 28/05/2017	केतु 20/01/2020	शुक्र 14/02/2023	सूर्य 28/03/2025	मंगल 21/02/2026
केतु 24/07/2017	शुक्र 30/07/2020	सूर्य 07/04/2023	चंद्र 02/05/2025	राहु 09/03/2026
शुक्र 02/01/2018	सूर्य 26/09/2020	चंद्र 02/07/2023	मंगल 27/05/2025	गुरु 24/03/2026
सूर्य 20/02/2018	चंद्र 31/12/2020	मंगल 31/08/2023	राहु 30/07/2025	शनि 10/04/2026
चंद्र 12/05/2018	मंगल 09/03/2021	राहु 03/02/2024	गुरु 25/09/2025	बुध 26/04/2026
मंगल 08/07/2018	राहु 29/08/2021	गुरु 20/06/2024	शनि 01/12/2025	केतु 02/05/2026
राहु 01/12/2018	गुरु 31/01/2022	शनि 01/12/2024	बुध 31/01/2026	शुक्र 20/05/2026

सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल	सूर्य - राहु	सूर्य - गुरु	सूर्य - शनि
20/05/2026	19/11/2026	27/03/2027	18/02/2028	07/12/2028
19/11/2026	27/03/2027	18/02/2028	07/12/2028	19/11/2029
चंद्र 04/06/2026	मंगल 26/11/2026	राहु 15/05/2027	गुरु 28/03/2028	शनि 31/01/2029
मंगल 15/06/2026	राहु 16/12/2026	गुरु 28/06/2027	शनि 14/05/2028	बुध 21/03/2029
राहु 13/07/2026	गुरु 02/01/2027	शनि 19/08/2027	बुध 24/06/2028	केतु 10/04/2029
गुरु 06/08/2026	शनि 22/01/2027	बुध 04/10/2027	केतु 11/07/2028	शुक्र 07/06/2029
शनि 04/09/2026	बुध 09/02/2027	केतु 24/10/2027	शुक्र 29/08/2028	सूर्य 24/06/2029
बुध 30/09/2026	केतु 16/02/2027	शुक्र 17/12/2027	सूर्य 12/09/2028	चंद्र 23/07/2029
केतु 10/10/2026	शुक्र 10/03/2027	सूर्य 03/01/2028	चंद्र 07/10/2028	मंगल 12/08/2029
शुक्र 10/11/2026	सूर्य 16/03/2027	चंद्र 30/01/2028	मंगल 24/10/2028	राहु 03/10/2029
सूर्य 19/11/2026	चंद्र 27/03/2027	मंगल 18/02/2028	राहु 07/12/2028	गुरु 19/11/2029



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध	सूर्य - केतु	सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र	चंद्र - मंगल
19/11/2029	25/09/2030	31/01/2031	31/01/2032	01/12/2032
25/09/2030	31/01/2031	31/01/2032	01/12/2032	02/07/2033
बुध 02/01/2030	केतु 03/10/2030	शुक्र 02/04/2031	चंद्र 26/02/2032	मंगल 13/12/2032
केतु 20/01/2030	शुक्र 24/10/2030	सूर्य 20/04/2031	मंगल 14/03/2032	राहु 14/01/2033
शुक्र 12/03/2030	सूर्य 30/10/2030	चंद्र 20/05/2031	राहु 29/04/2032	गुरु 11/02/2033
सूर्य 28/03/2030	चंद्र 10/11/2030	मंगल 11/06/2031	गुरु 09/06/2032	शनि 17/03/2033
चंद्र 23/04/2030	मंगल 17/11/2030	राहु 05/08/2031	शनि 27/07/2032	बुध 16/04/2033
मंगल 11/05/2030	राहु 07/12/2030	गुरु 22/09/2031	बुध 08/09/2032	केतु 29/04/2033
राहु 27/06/2030	गुरु 24/12/2030	शनि 19/11/2031	केतु 26/09/2032	शुक्र 03/06/2033
गुरु 07/08/2030	शनि 13/01/2031	बुध 10/01/2032	शुक्र 15/11/2032	सूर्य 14/06/2033
शनि 25/09/2030	बुध 31/01/2031	केतु 31/01/2032	सूर्य 01/12/2032	चंद्र 02/07/2033

चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु
02/07/2033	31/12/2034	01/05/2036	01/12/2037	02/05/2039
31/12/2034	01/05/2036	01/12/2037	02/05/2039	01/12/2039
राहु 22/09/2033	गुरु 06/03/2035	शनि 01/08/2036	बुध 12/02/2038	केतु 15/05/2039
गुरु 04/12/2033	शनि 23/05/2035	बुध 22/10/2036	केतु 14/03/2038	शुक्र 19/06/2039
शनि 01/03/2034	बुध 31/07/2035	केतु 25/11/2036	शुक्र 09/06/2038	सूर्य 30/06/2039
बुध 17/05/2034	केतु 28/08/2035	शुक्र 01/03/2037	सूर्य 04/07/2038	चंद्र 18/07/2039
केतु 18/06/2034	शुक्र 17/11/2035	सूर्य 30/03/2037	चंद्र 17/08/2038	मंगल 30/07/2039
शुक्र 17/09/2034	सूर्य 11/12/2035	चंद्र 17/05/2037	मंगल 16/09/2038	राहु 31/08/2039
सूर्य 15/10/2034	चंद्र 21/01/2036	मंगल 20/06/2037	राहु 02/12/2038	गुरु 28/09/2039
चंद्र 30/11/2034	मंगल 18/02/2036	राहु 15/09/2037	गुरु 09/02/2039	शनि 01/11/2039
मंगल 31/12/2034	राहु 01/05/2036	गुरु 01/12/2037	शनि 02/05/2039	बुध 01/12/2039

चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु
01/12/2039	01/08/2041	31/01/2042	29/06/2042	17/07/2043
01/08/2041	31/01/2042	29/06/2042	17/07/2043	22/06/2044
शुक्र 12/03/2040	सूर्य 10/08/2041	मंगल 08/02/2042	राहु 25/08/2042	गुरु 01/09/2043
सूर्य 11/04/2040	चंद्र 25/08/2041	राहु 03/03/2042	गुरु 15/10/2042	शनि 25/10/2043
चंद्र 01/06/2040	मंगल 05/09/2041	गुरु 23/03/2042	शनि 15/12/2042	बुध 12/12/2043
मंगल 06/07/2040	राहु 02/10/2041	शनि 15/04/2042	बुध 08/02/2043	केतु 01/01/2044
राहु 06/10/2040	गुरु 27/10/2041	बुध 06/05/2042	केतु 02/03/2043	शुक्र 27/02/2044
गुरु 26/12/2040	शनि 25/11/2041	केतु 15/05/2042	शुक्र 05/05/2043	सूर्य 15/03/2044
शनि 01/04/2041	बुध 21/12/2041	शुक्र 09/06/2042	सूर्य 24/05/2043	चंद्र 12/04/2044
बुध 27/06/2041	केतु 31/12/2041	सूर्य 16/06/2042	चंद्र 25/06/2043	मंगल 02/05/2044
केतु 01/08/2041	शुक्र 31/01/2042	चंद्र 29/06/2042	मंगल 17/07/2043	राहु 22/06/2044



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि	मंगल - बुध	मंगल - केतु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य
22/06/2044	01/08/2045	29/07/2046	25/12/2046	25/02/2048
01/08/2045	29/07/2046	25/12/2046	25/02/2048	01/07/2048
शनि 25/08/2044	बुध 21/09/2045	केतु 07/08/2046	शुक्र 06/03/2047	सूर्य 02/03/2048
बुध 22/10/2044	केतु 12/10/2045	शुक्र 01/09/2046	सूर्य 28/03/2047	चंद्र 13/03/2048
केतु 14/11/2044	शुक्र 12/12/2045	सूर्य 08/09/2046	चंद्र 02/05/2047	मंगल 20/03/2048
शुक्र 21/01/2045	सूर्य 30/12/2045	चंद्र 21/09/2046	मंगल 27/05/2047	राहु 08/04/2048
सूर्य 10/02/2045	चंद्र 29/01/2046	मंगल 29/09/2046	राहु 30/07/2047	गुरु 25/04/2048
चंद्र 16/03/2045	मंगल 19/02/2046	राहु 22/10/2046	गुरु 25/09/2047	शनि 15/05/2048
मंगल 08/04/2045	राहु 15/04/2046	गुरु 11/11/2046	शनि 01/12/2047	बुध 03/06/2048
राहु 08/06/2045	गुरु 02/06/2046	शनि 04/12/2046	बुध 31/01/2048	केतु 10/06/2048
गुरु 01/08/2045	शनि 29/07/2046	बुध 25/12/2046	केतु 25/02/2048	शुक्र 01/07/2048

मंगल - चंद्र	राहु - राहु	राहु - गुरु	राहु - शनि	राहु - बुध
01/07/2048	30/01/2049	14/10/2051	08/03/2054	12/01/2057
30/01/2049	14/10/2051	08/03/2054	12/01/2057	02/08/2059
चंद्र 19/07/2048	राहु 27/06/2049	गुरु 07/02/2052	शनि 20/08/2054	बुध 24/05/2057
मंगल 01/08/2048	गुरु 06/11/2049	शनि 25/06/2052	बुध 14/01/2055	केतु 17/07/2057
राहु 02/09/2048	शनि 11/04/2050	बुध 27/10/2052	केतु 16/03/2055	शुक्र 20/12/2057
गुरु 30/09/2048	बुध 29/08/2050	केतु 18/12/2052	शुक्र 06/09/2055	सूर्य 04/02/2058
शनि 03/11/2048	केतु 25/10/2050	शुक्र 13/05/2053	सूर्य 28/10/2055	चंद्र 23/04/2058
बुध 03/12/2048	शुक्र 08/04/2051	सूर्य 26/06/2053	चंद्र 22/01/2056	मंगल 16/06/2058
केतु 15/12/2048	सूर्य 27/05/2051	चंद्र 07/09/2053	मंगल 23/03/2056	राहु 03/11/2058
शुक्र 20/01/2049	चंद्र 17/08/2051	मंगल 28/10/2053	राहु 26/08/2056	गुरु 07/03/2059
सूर्य 30/01/2049	मंगल 14/10/2051	राहु 08/03/2054	गुरु 12/01/2057	शनि 02/08/2059

राहु - केतु	राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल
02/08/2059	19/08/2060	20/08/2063	14/07/2064	12/01/2066
19/08/2060	20/08/2063	14/07/2064	12/01/2066	31/01/2067
केतु 24/08/2059	शुक्र 18/02/2061	सूर्य 05/09/2063	चंद्र 28/08/2064	मंगल 04/02/2066
शुक्र 27/10/2059	सूर्य 13/04/2061	चंद्र 03/10/2063	मंगल 29/09/2064	राहु 02/04/2066
सूर्य 15/11/2059	चंद्र 14/07/2061	मंगल 22/10/2063	राहु 20/12/2064	गुरु 23/05/2066
चंद्र 17/12/2059	मंगल 16/09/2061	राहु 10/12/2063	गुरु 03/03/2065	शनि 23/07/2066
मंगल 08/01/2060	राहु 27/02/2062	गुरु 23/01/2064	शनि 29/05/2065	बुध 15/09/2066
राहु 06/03/2060	गुरु 23/07/2062	शनि 15/03/2064	बुध 15/08/2065	केतु 08/10/2066
गुरु 26/04/2060	शनि 13/01/2063	बुध 01/05/2064	केतु 16/09/2065	शुक्र 11/12/2066
शनि 26/06/2060	बुध 17/06/2063	केतु 20/05/2064	शुक्र 16/12/2065	सूर्य 30/12/2066
बुध 19/08/2060	केतु 20/08/2063	शुक्र 14/07/2064	सूर्य 12/01/2066	चंद्र 31/01/2067



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु	गुरु - शुक्र
31/01/2067	20/03/2069	01/10/2071	06/01/2074	13/12/2074
20/03/2069	01/10/2071	06/01/2074	13/12/2074	13/08/2077
गुरु 15/05/2067	शनि 14/08/2069	बुध 27/01/2072	केतु 26/01/2074	शुक्र 25/05/2075
शनि 15/09/2067	बुध 23/12/2069	केतु 15/03/2072	शुक्र 24/03/2074	सूर्य 12/07/2075
बुध 04/01/2068	केतु 15/02/2070	शुक्र 31/07/2072	सूर्य 10/04/2074	चंद्र 01/10/2075
केतु 18/02/2068	शुक्र 19/07/2070	सूर्य 10/09/2072	चंद्र 08/05/2074	मंगल 27/11/2075
शुक्र 27/06/2068	सूर्य 03/09/2070	चंद्र 18/11/2072	मंगल 28/05/2074	राहु 21/04/2076
सूर्य 05/08/2068	चंद्र 19/11/2070	मंगल 06/01/2073	राहु 18/07/2074	गुरु 29/08/2076
चंद्र 09/10/2068	मंगल 12/01/2071	राहु 10/05/2073	गुरु 02/09/2074	शनि 30/01/2077
मंगल 23/11/2068	राहु 31/05/2071	गुरु 28/08/2073	शनि 26/10/2074	बुध 17/06/2077
राहु 20/03/2069	गुरु 01/10/2071	शनि 06/01/2074	बुध 13/12/2074	केतु 13/08/2077

गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु	शनि - शनि
13/08/2077	01/06/2078	01/10/2079	06/09/2080	31/01/2083
01/06/2078	01/10/2079	06/09/2080	31/01/2083	03/02/2086
सूर्य 28/08/2077	चंद्र 12/07/2078	मंगल 21/10/2079	राहु 16/01/2081	शनि 24/07/2083
चंद्र 21/09/2077	मंगल 09/08/2078	राहु 11/12/2079	गुरु 13/05/2081	बुध 27/12/2083
मंगल 08/10/2077	राहु 21/10/2078	गुरु 26/01/2080	शनि 28/09/2081	केतु 29/02/2084
राहु 21/11/2077	गुरु 25/12/2078	शनि 20/03/2080	बुध 31/01/2082	शुक्र 30/08/2084
गुरु 30/12/2077	शनि 13/03/2079	बुध 07/05/2080	केतु 23/03/2082	सूर्य 24/10/2084
शनि 14/02/2078	बुध 20/05/2079	केतु 27/05/2080	शुक्र 16/08/2082	चंद्र 23/01/2085
बुध 28/03/2078	केतु 18/06/2079	शुक्र 23/07/2080	सूर्य 29/09/2082	मंगल 28/03/2085
केतु 14/04/2078	शुक्र 07/09/2079	सूर्य 09/08/2080	चंद्र 11/12/2082	राहु 09/09/2085
शुक्र 01/06/2078	सूर्य 01/10/2079	चंद्र 06/09/2080	मंगल 31/01/2083	गुरु 03/02/2086

शनि - बुध	शनि - केतु	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य	शनि - चंद्र
03/02/2086	13/10/2088	22/11/2089	21/01/2093	03/01/2094
13/10/2088	22/11/2089	21/01/2093	03/01/2094	05/08/2095
बुध 22/06/2086	केतु 05/11/2088	शुक्र 02/06/2090	सूर्य 08/02/2093	चंद्र 20/02/2094
केतु 18/08/2086	शुक्र 12/01/2089	सूर्य 30/07/2090	चंद्र 09/03/2093	मंगल 26/03/2094
शुक्र 29/01/2087	सूर्य 01/02/2089	चंद्र 04/11/2090	मंगल 29/03/2093	राहु 21/06/2094
सूर्य 19/03/2087	चंद्र 07/03/2089	मंगल 10/01/2091	राहु 20/05/2093	गुरु 06/09/2094
चंद्र 09/06/2087	मंगल 31/03/2089	राहु 03/07/2091	गुरु 05/07/2093	शनि 07/12/2094
मंगल 06/08/2087	राहु 30/05/2089	गुरु 04/12/2091	शनि 29/08/2093	बुध 27/02/2095
राहु 31/12/2087	गुरु 23/07/2089	शनि 04/06/2092	बुध 17/10/2093	केतु 01/04/2095
गुरु 10/05/2088	शनि 25/09/2089	बुध 15/11/2092	केतु 06/11/2093	शुक्र 07/07/2095
शनि 13/10/2088	बुध 22/11/2089	केतु 21/01/2093	शुक्र 03/01/2094	सूर्य 05/08/2095



RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - शनि - शनि		शुक्र - शनि - बुध		शुक्र - शनि - केतु		शुक्र - शनि - शुक्र	
01/12/2018 13:08		02/06/2019 16:19		13/11/2019 12:50		20/01/2020 00:07	
02/06/2019 16:19		13/11/2019 12:50		20/01/2020 00:07		30/07/2020 18:37	
शनि	30/12/2018 13:02	बुध	25/06/2019 21:25	केतु	17/11/2019 11:17	शुक्र	21/02/2020 03:12
बुध	25/01/2019 11:41	केतु	05/07/2019 10:49	शुक्र	28/11/2019 17:10	सूर्य	01/03/2020 18:31
केतु	05/02/2019 04:04	शुक्र	01/08/2019 18:14	सूर्य	02/12/2019 02:08	चंद्र	17/03/2020 20:04
शुक्र	07/03/2019 16:36	सूर्य	09/08/2019 22:52	चंद्र	07/12/2019 17:04	मंगल	29/03/2020 01:56
सूर्य	16/03/2019 20:22	चंद्र	23/08/2019 14:34	मंगल	11/12/2019 15:32	राहु	26/04/2020 23:55
चंद्र	01/04/2019 02:37	मंगल	02/09/2019 03:58	राहु	21/12/2019 18:25	गुरु	22/05/2020 16:47
मंगल	11/04/2019 19:01	राहु	26/09/2019 17:51	गुरु	30/12/2019 18:20	शनि	22/06/2020 05:19
राहु	09/05/2019 06:17	गुरु	18/10/2019 14:11	शनि	10/01/2020 10:43	बुध	19/07/2020 12:44
गुरु	02/06/2019 16:19	शनि	13/11/2019 12:50	बुध	20/01/2020 00:07	केतु	30/07/2020 18:37
शुक्र - शनि - सूर्य		शुक्र - शनि - चंद्र		शुक्र - शनि - मंगल		शुक्र - शनि - राहु	
30/07/2020 18:37		26/09/2020 14:34		31/12/2020 23:49		09/03/2021 11:05	
26/09/2020 14:34		31/12/2020 23:49		09/03/2021 11:05		29/08/2021 22:56	
सूर्य	02/08/2020 16:00	चंद्र	04/10/2020 15:20	मंगल	04/01/2021 22:16	राहु	04/04/2021 11:40
चंद्र	07/08/2020 11:40	मंगल	10/10/2020 06:16	राहु	15/01/2021 01:09	गुरु	27/04/2021 14:50
मंगल	10/08/2020 20:38	राहु	24/10/2020 17:15	गुरु	24/01/2021 01:04	शनि	25/05/2021 02:07
राहु	19/08/2020 12:49	गुरु	06/11/2020 13:41	शनि	03/02/2021 17:27	बुध	18/06/2021 16:00
गुरु	27/08/2020 05:53	शनि	21/11/2020 19:57	बुध	13/02/2021 06:51	केतु	28/06/2021 18:53
शनि	05/09/2020 09:39	बुध	05/12/2020 11:40	केतु	17/02/2021 05:18	शुक्र	27/07/2021 16:52
बुध	13/09/2020 14:16	केतु	11/12/2020 02:36	शुक्र	28/02/2021 11:11	सूर्य	05/08/2021 09:03
केतु	16/09/2020 23:14	शुक्र	27/12/2020 04:09	सूर्य	03/03/2021 20:09	चंद्र	19/08/2021 20:03
शुक्र	26/09/2020 14:34	सूर्य	31/12/2020 23:49	चंद्र	09/03/2021 11:05	मंगल	29/08/2021 22:56
शुक्र - शनि - गुरु		शुक्र - बुध - बुध		शुक्र - बुध - केतु		शुक्र - बुध - शुक्र	
29/08/2021 22:56		31/01/2022 04:08		26/06/2022 18:43		26/08/2022 03:32	
31/01/2022 04:08		26/06/2022 18:43		26/08/2022 03:32		14/02/2023 15:02	
गुरु	19/09/2021 12:26	बुध	20/02/2022 22:36	केतु	30/06/2022 07:13	शुक्र	23/09/2022 21:27
शनि	13/10/2021 22:27	केतु	01/03/2022 11:51	शुक्र	10/07/2022 08:42	सूर्य	02/10/2022 12:26
बुध	04/11/2021 18:47	शुक्र	25/03/2022 22:17	सूर्य	13/07/2022 09:08	चंद्र	16/10/2022 21:23
केतु	13/11/2021 18:41	सूर्य	02/04/2022 06:12	चंद्र	18/07/2022 09:52	मंगल	26/10/2022 22:51
शुक्र	09/12/2021 11:33	चंद्र	14/04/2022 11:25	मंगल	21/07/2022 22:23	राहु	21/11/2022 19:47
सूर्य	17/12/2021 04:37	मंगल	23/04/2022 00:40	राहु	30/07/2022 23:43	गुरु	14/12/2022 19:43
चंद्र	30/12/2021 01:03	राहु	15/05/2022 00:27	गुरु	08/08/2022 00:53	शनि	11/01/2023 03:08
मंगल	08/01/2022 00:57	गुरु	03/06/2022 13:36	शनि	17/08/2022 14:17	बुध	04/02/2023 13:34
राहु	31/01/2022 04:08	शनि	26/06/2022 18:43	बुध	26/08/2022 03:32	केतु	14/02/2023 15:02



RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - बुध - सूर्य		शुक्र - बुध - चंद्र		शुक्र - बुध - मंगल		शुक्र - बुध - राहु	
14/02/2023 15:02		07/04/2023 08:53		02/07/2023 14:38		31/08/2023 23:28	
07/04/2023 08:53		02/07/2023 14:38		31/08/2023 23:28		03/02/2024 05:01	
सूर्य	17/02/2023 05:08	चंद्र	14/04/2023 13:22	मंगल	06/07/2023 03:09	राहु	24/09/2023 06:17
चंद्र	21/02/2023 12:37	मंगल	19/04/2023 14:06	राहु	15/07/2023 04:28	गुरु	14/10/2023 23:02
मंगल	24/02/2023 13:03	राहु	02/05/2023 12:34	गुरु	23/07/2023 05:39	शनि	08/11/2023 12:55
राहु	04/03/2023 07:20	गुरु	14/05/2023 00:32	शनि	01/08/2023 19:03	बुध	30/11/2023 12:42
गुरु	11/03/2023 04:55	शनि	27/05/2023 16:14	बुध	10/08/2023 08:18	केतु	09/12/2023 14:01
शनि	19/03/2023 09:32	बुध	08/06/2023 21:27	केतु	13/08/2023 20:49	शुक्र	04/01/2024 10:57
बुध	26/03/2023 17:28	केतु	13/06/2023 22:11	शुक्र	23/08/2023 22:17	सूर्य	12/01/2024 05:13
केतु	29/03/2023 17:55	शुक्र	28/06/2023 07:09	सूर्य	26/08/2023 22:43	चंद्र	25/01/2024 03:41
शुक्र	07/04/2023 08:53	सूर्य	02/07/2023 14:38	चंद्र	31/08/2023 23:28	मंगल	03/02/2024 05:01
शुक्र - बुध - गुरु		शुक्र - बुध - शनि		शुक्र - केतु - केतु		शुक्र - केतु - शुक्र	
03/02/2024 05:01		20/06/2024 04:37		01/12/2024 01:08		25/12/2024 21:43	
20/06/2024 04:37		01/12/2024 01:08		25/12/2024 21:43		06/03/2025 22:13	
गुरु	21/02/2024 14:33	शनि	16/07/2024 03:16	केतु	02/12/2024 11:56	शुक्र	06/01/2025 17:48
शनि	14/03/2024 10:54	बुध	08/08/2024 08:22	शुक्र	06/12/2024 15:22	सूर्य	10/01/2025 07:01
बुध	03/04/2024 00:02	केतु	17/08/2024 21:46	सूर्य	07/12/2024 21:12	चंद्र	16/01/2025 05:04
केतु	11/04/2024 01:13	शुक्र	14/09/2024 05:11	चंद्र	09/12/2024 22:54	मंगल	20/01/2025 08:29
शुक्र	04/05/2024 01:09	सूर्य	22/09/2024 09:49	मंगल	11/12/2024 09:42	राहु	31/01/2025 00:10
सूर्य	10/05/2024 22:44	चंद्र	06/10/2024 01:31	राहु	15/12/2024 03:12	गुरु	09/02/2025 11:26
चंद्र	22/05/2024 10:42	मंगल	15/10/2024 14:55	गुरु	18/12/2024 10:44	शनि	20/02/2025 17:19
मंगल	30/05/2024 11:52	राहु	09/11/2024 04:48	शनि	22/12/2024 09:12	बुध	02/03/2025 18:47
राहु	20/06/2024 04:37	गुरु	01/12/2024 01:08	बुध	25/12/2024 21:43	केतु	06/03/2025 22:13
शुक्र - केतु - सूर्य		शुक्र - केतु - चंद्र		शुक्र - केतु - मंगल		शुक्र - केतु - राहु	
06/03/2025 22:13		28/03/2025 05:34		02/05/2025 17:49		27/05/2025 14:23	
28/03/2025 05:34		02/05/2025 17:49		27/05/2025 14:23		30/07/2025 12:26	
सूर्य	07/03/2025 23:47	चंद्र	31/03/2025 04:35	मंगल	04/05/2025 04:37	राहु	06/06/2025 04:29
चंद्र	09/03/2025 18:23	मंगल	02/04/2025 06:18	राहु	07/05/2025 22:06	गुरु	14/06/2025 17:02
मंगल	11/03/2025 00:13	राहु	07/04/2025 14:08	गुरु	11/05/2025 05:38	शनि	24/06/2025 19:55
राहु	14/03/2025 04:55	गुरु	12/04/2025 07:46	शनि	15/05/2025 04:06	बुध	03/07/2025 21:15
गुरु	17/03/2025 01:06	शनि	17/04/2025 22:42	बुध	18/05/2025 16:37	केतु	07/07/2025 14:44
शनि	20/03/2025 10:04	बुध	22/04/2025 23:26	केतु	20/05/2025 03:25	शुक्र	18/07/2025 06:24
बुध	23/03/2025 10:30	केतु	25/04/2025 01:09	शुक्र	24/05/2025 06:50	सूर्य	21/07/2025 11:07
केतु	24/03/2025 16:20	शुक्र	30/04/2025 23:12	सूर्य	25/05/2025 12:40	चंद्र	26/07/2025 18:57
शुक्र	28/03/2025 05:34	सूर्य	02/05/2025 17:49	चंद्र	27/05/2025 14:23	मंगल	30/07/2025 12:26



RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : उल्का 3 वर्ष 8 मास 4 दिन

उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष
30/08/1988	04/05/1992	05/05/1999	05/05/2007	04/05/2008
04/05/1992	05/05/1999	05/05/2007	04/05/2008	05/05/2010
00/00/0000	सिद्ध 13/09/1993	संक 12/02/2001	मंग 15/05/2007	पिंग 14/06/2008
30/08/1988	संक 05/04/1995	मंग 04/05/2001	पिंग 04/06/2007	धांय 14/08/2008
संक 03/11/1989	मंग 15/06/1995	पिंग 14/10/2001	धांय 05/07/2007	भ्राम 03/11/2008
मंग 03/01/1990	पिंग 04/11/1995	धांय 14/06/2002	भ्राम 14/08/2007	भद्रि 12/02/2009
पिंग 05/05/1990	धांय 04/06/1996	भ्राम 05/05/2003	भद्रि 04/10/2007	उल्क 14/06/2009
धांय 03/11/1990	भ्राम 15/03/1997	भद्रि 14/06/2004	उल्क 04/12/2007	सिद्ध 03/11/2009
भ्राम 05/07/1991	भद्रि 05/03/1998	उल्क 14/10/2005	सिद्ध 13/02/2008	संक 14/04/2010
भद्रि 04/05/1992	उल्क 05/05/1999	सिद्ध 05/05/2007	संक 04/05/2008	मंग 05/05/2010

धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
05/05/2010	04/05/2013	04/05/2017	05/05/2022	04/05/2028
04/05/2013	04/05/2017	05/05/2022	04/05/2028	05/05/2035
धांय 04/08/2010	भ्राम 14/10/2013	भद्रि 13/01/2018	उल्क 05/05/2023	सिद्ध 13/09/2029
भ्राम 04/12/2010	भद्रि 05/05/2014	उल्क 13/11/2018	सिद्ध 04/07/2024	संक 05/04/2031
भद्रि 05/05/2011	उल्क 03/01/2015	सिद्ध 04/11/2019	संक 03/11/2025	मंग 15/06/2031
उल्क 04/11/2011	सिद्ध 14/10/2015	संक 13/12/2020	मंग 03/01/2026	पिंग 04/11/2031
सिद्ध 04/06/2012	संक 03/09/2016	मंग 02/02/2021	पिंग 05/05/2026	धांय 04/06/2032
संक 02/02/2013	मंग 14/10/2016	पिंग 15/05/2021	धांय 03/11/2026	भ्राम 15/03/2033
मंग 05/03/2013	पिंग 03/01/2017	धांय 14/10/2021	भ्राम 05/07/2027	भद्रि 05/03/2034
पिंग 04/05/2013	धांय 04/05/2017	भ्राम 05/05/2022	भद्रि 04/05/2028	उल्क 05/05/2035

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई है।



योगिनी दशा

संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष
05/05/2035	05/05/2043	04/05/2044	05/05/2046	04/05/2049
05/05/2043	04/05/2044	05/05/2046	04/05/2049	04/05/2053
संक 12/02/2037	मंग 15/05/2043	पिंग 14/06/2044	धांय 04/08/2046	भाम 14/10/2049
मंग 04/05/2037	पिंग 04/06/2043	धांय 14/08/2044	भाम 04/12/2046	भद्रि 05/05/2050
पिंग 14/10/2037	धांय 05/07/2043	भाम 03/11/2044	भद्रि 05/05/2047	उल्क 03/01/2051
धांय 14/06/2038	भाम 14/08/2043	भद्रि 12/02/2045	उल्क 04/11/2047	सिद्ध 14/10/2051
भाम 05/05/2039	भद्रि 04/10/2043	उल्क 14/06/2045	सिद्ध 04/06/2048	संक 03/09/2052
भद्रि 14/06/2040	उल्क 04/12/2043	सिद्ध 03/11/2045	संक 02/02/2049	मंग 14/10/2052
उल्क 14/10/2041	सिद्ध 13/02/2044	संक 14/04/2046	मंग 05/03/2049	पिंग 03/01/2053
सिद्ध 05/05/2043	संक 04/05/2044	मंग 05/05/2046	पिंग 04/05/2049	धांय 04/05/2053
भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष
04/05/2053	05/05/2058	04/05/2064	05/05/2071	05/05/2079
05/05/2058	04/05/2064	05/05/2071	05/05/2079	04/05/2080
भद्रि 13/01/2054	उल्क 05/05/2059	सिद्ध 13/09/2065	संक 12/02/2073	मंग 15/05/2079
उल्क 13/11/2054	सिद्ध 04/07/2060	संक 05/04/2067	मंग 04/05/2073	पिंग 04/06/2079
सिद्ध 04/11/2055	संक 03/11/2061	मंग 15/06/2067	पिंग 14/10/2073	धांय 05/07/2079
संक 13/12/2056	मंग 03/01/2062	पिंग 04/11/2067	धांय 14/06/2074	भाम 14/08/2079
मंग 02/02/2057	पिंग 05/05/2062	धांय 04/06/2068	भाम 05/05/2075	भद्रि 04/10/2079
पिंग 15/05/2057	धांय 03/11/2062	भाम 15/03/2069	भद्रि 14/06/2076	उल्क 04/12/2079
धांय 14/10/2057	भाम 05/07/2063	भद्रि 05/03/2070	उल्क 14/10/2077	सिद्ध 13/02/2080
भाम 05/05/2058	भद्रि 04/05/2064	उल्क 05/05/2071	सिद्ध 05/05/2079	संक 04/05/2080
पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष
04/05/2080	05/05/2082	04/05/2085	04/05/2089	05/05/2094
05/05/2082	04/05/2085	04/05/2089	05/05/2094	00/00/0000
पिंग 14/06/2080	धांय 04/08/2082	भाम 14/10/2085	भद्रि 13/01/2090	उल्क 05/05/2095
धांय 14/08/2080	भाम 04/12/2082	भद्रि 05/05/2086	उल्क 13/11/2090	सिद्ध 04/07/2096
भाम 03/11/2080	भद्रि 05/05/2083	उल्क 03/01/2087	सिद्ध 04/11/2091	संक 30/08/2096
भद्रि 12/02/2081	उल्क 04/11/2083	सिद्ध 14/10/2087	संक 13/12/2092	00/00/0000
उल्क 14/06/2081	सिद्ध 04/06/2084	संक 03/09/2088	मंग 02/02/2093	00/00/0000
सिद्ध 03/11/2081	संक 02/02/2085	मंग 14/10/2088	पिंग 15/05/2093	00/00/0000
संक 14/04/2082	मंग 05/03/2085	पिंग 03/01/2089	धांय 14/10/2093	00/00/0000
मंग 05/05/2082	पिंग 04/05/2085	धांय 04/05/2089	भाम 05/05/2094	00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	1
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 1
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध



RATNA JYOTI[®]

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

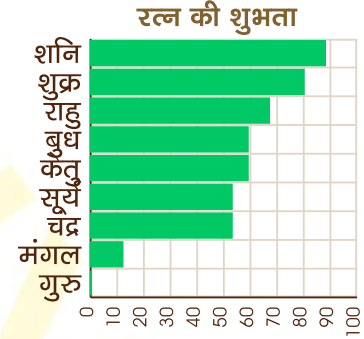
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	88%	पराक्रम, सुख, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	80%	भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	67%	सन्तति सुख, पराक्रम
पन्ना	बुध	59%	कम खर्च, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	59%	धनार्जन
माणिक्य	सूर्य	53%	धनार्जन
मोती	चंद्र	53%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	12%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
पुखराज	गुरु	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	31/01/1999	60%	31%	12%	72%	0%	86%	88%	67%	59%
केतु	31/01/2006	32%	31%	25%	59%	0%	86%	75%	55%	72%
शुक्र	31/01/2026	32%	31%	12%	66%	0%	92%	94%	73%	66%
सूर्य	31/01/2032	66%	59%	25%	59%	0%	67%	75%	55%	44%
चंद्र	31/01/2042	60%	66%	12%	66%	0%	80%	88%	55%	44%
मंगल	30/01/2049	60%	59%	38%	44%	0%	80%	88%	55%	66%
राहु	31/01/2067	32%	31%	0%	59%	0%	86%	94%	80%	44%
गुरु	31/01/2083	60%	59%	25%	44%	6%	67%	88%	67%	59%
शनि	01/02/2102	32%	31%	0%	66%	0%	86%	100%	73%	44%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।



शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

नीलम आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, पन्ना, लहसुनिया, माणिक्य एवं मोती रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा व पुखराज रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-



नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। आध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विद्वान, चतुर, विवेकी, शत्रुहंता बनायेगा। नीलम रत्न धारण करने से आप बुद्धिमान, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगे। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में करेगा। भाईयों से संबंध मधुर करेगा। संतान सुख के योग बनायेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते हैं। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढ़ने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न



धारण कर सकते हैं। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु पंचम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न आपको तीक्ष्णबुद्धिवान, विभिन्न शास्त्रों का ज्ञाता, दयालु और कर्मठ बनायेगा। इसकी शुभता से आपके भाग्य में शुभता आयेगी। व्यवसायिक कार्यों में आपको रत्न शुभता प्रदान कर सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपकी लेखनकला में कुशलता आयेगी। आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। गोमेद रत्न आपको सदमार्ग पर चलने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव से धन संग्रह करना आपके लिए सहज होगा। गोमेद रत्न आपको चिकित्सा क्षेत्र में सफलता देगा।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि तीसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराएँ। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं



जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। आप बुध ग्रह की शुभता पाने के लिए पन्ना रत्न धारण करें। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान, विचारशील और विवेकी व्यक्ति बनेंगे। आपको धर्म के प्रति आस्थावान बनाएगा। यह रत्न आपको एक स्पष्ट वक्ता बनाएगा। बुध रत्न पन्ना से आपको आलस्य से बचाएगा। तथा रत्न शुभता से आप दूसरों के धन का लालच नहीं करेंगे। पन्ना रत्न शुभता आपको उच्च पद और प्रतिष्ठा देगा। बौद्धिक योग्यता से आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में भी यह रत्न शुभ फल प्रदान करेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। बुध ग्रह आपके लिए शुभ है। यहां बुध लग्नेश शुक्र का मित्र भी है इसलिए ओर अधिक शुभ हो गया है। इसकी शुभता प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। पन्ना रत्न आपके लिए भाग्योदय रत्न सिद्ध हो सकता है। इस रत्न को धारण कर आप दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि कर सकता है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्म, पुण्य, भाग्य, गुरु, देवता, तीर्थ यात्रा, दान इत्यादि विषयों से संलग्न कर सकता है। यह रत्न आपको बौद्धिक कार्यों में भाग्य का सहयोग दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का 9 माला या 9 माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं 8 मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु एकादश भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके शत्रु आपसे भयभीत होंगे। आपकी चिंताओं का निवारण होगी। संतान संबंधी चिंताओं को शीघ्र दूर करने में सफल होंगे। आपका घर सुंदर सज्जायुक्त हो सकता है। पेट के रोगों से आपको राहत मिलेगी। आमदनी के साधनों में



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

वृद्धि होगी। लहसुनिया रत्न आपको तेजस्वी, मनोहरी व्यक्तित्व और संतोषी जीवन देगा। आपको आय क्षेत्रों में प्रशंसा प्राप्त होगी।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य एकादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्ति के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी हो सकते हैं। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अहंकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का 9 माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल 'केट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य एकादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आप धनवान, बलवान और सुखी बनेंगे। यह रत्न धारण कर आप स्वाभिमानी बनेंगे। रत्न धारण से आप तपस्वी और योगी समान बनेंगे। आपका जीवन सदाचार युक्त होगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। माणिक्य रत्न आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। उच्च अधिकारियों से आपके संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आपको महत्त्वाकांक्षी बनाएगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को बल प्रदान कर सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके शारीरिक बल का विकास होगा। यह माणिक्य रत्न आय क्षेत्रों में आपको प्रभावशाली बना सकता है। रत्न शुभता से आपका आत्मविश्वास उच्च रहेगा। इसके साथ ही यह रत्न आपकी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने में भी शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको उच्च पद और सरकारी क्षेत्रों से आय प्राप्ति के साधन उपलब्ध करा सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूठी, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में



स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न आपको नौकरी में स्थिरता प्रदान करेगा। मोती रत्न से आपके अपने मामा-मौसी से संबंध मधुर होंगे। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियों से राहत मिलेगी। आप अपने शत्रुओं की पहचान सरलता से कर पायेंगे। चंद्र रत्न मोती ऋण विषयों का समाधान करेगा। मोती रत्न शुभ होकर आपको उन्नति और सफलता देगा। आपको कोई बड़ा पद प्राप्त हो सकता है। मोती रत्न चंद्र ग्रह को शुभता प्रदान करेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यों से आय प्राप्त के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृत्ति का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालन कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूठी में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौ सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं



२ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको प्रसिद्धि की प्रतिकूलता, विद्वानों से शत्रुता, तकनीकी विषयों में अरुचि हो सकती है। अत्यधिक साहस, जोखिम लेने का स्वभाव आपको शारीरिक कष्ट दे सकता है। विरोधियों से कष्ट आपके लिए बने रहेंगे। यह रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति को बाधित कर सकता है। प्रतियोगिताओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। मूंगा रत्न आपको अधीनस्थों के द्वारा पीड़ित कर सकता है। माता के सुख में कमी के योग बन सकते हैं। मूंगा रत्न आपको रक्त प्रवाह से संबंधित रोग दे सकता है। शक्ति का दुरुपयोग आपके द्वारा हो सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको कुटुंब सुख और धन संचय में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से आपको परिश्रम और बुद्धि का सहयोग पूर्ण रूप से नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको सभा में भाषण देने में संकोच भाव दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है। मूंगा रत्न धारण से आपका जीवन साथी अत्यधिक क्रोध करने वाला हो सकता है। रत्न प्रभाव आपके जीवन साथी में अत्यधिक जोश, ऊर्जा और उत्तेजना दे सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद व्यापारिक साझेदार से अनबन हो सकती है। ग्रहस्थ जीवन में तनाव, क्लेश और अंशान्ति की स्थिति बन सकती है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती हैं। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते हैं। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे हैं। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते हैं।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेस एवं षष्ठेश है। गुरु ग्रह की शुभता में कमी के कारण गुरु रत्न पुखराज की अनुकूलता आपके लिए नहीं बन रही है। अतः इस रत्न को धारण करने पर आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कार्यों को करने से पूर्व ही आपके मन में नकारात्मक भाव आ सकते हैं। तीसरे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण यह रत्न आपमें साहस और पुरुषार्थ की कमी कर सकता है। योग्यता और कुशलता से धन अर्जित करने में इस रत्न की प्रतिकूलता आपके लिए बनी हुई है। गुरु रत्न पुखराज धारण आपकी उच्च शिक्षा और नौकरी दोनों क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में परेशानियां दे सकता है। बौद्धिक क्षमता का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र

(31/01/2006 - 31/01/2026)

शुक्र की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, पन्ना व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व मोती रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य

(31/01/2026 - 31/01/2032)

सूर्य की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, माणिक्य, मोती, पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र

(31/01/2032 - 31/01/2042)

चन्द्र की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, पन्ना, माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल

(31/01/2042 - 30/01/2049)

मंगल की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

लहसुनिया, माणिक्य, मोती व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु **(30/01/2049 - 31/01/2067)**

राहु की दशा में आपका नीलम, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, माणिक्य व मोती रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु **(31/01/2067 - 31/01/2083)**

गुरु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, गोमेद, माणिक्य, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि **(31/01/2083 - 01/02/2102)**

शनि की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, माणिक्य व मोती रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर



सकते हैं।



RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ओपल

आपका जन्म तुला राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शुक्र होता है। शुक्र ज्योतिषशास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है, शुक्र को असुरों का देव भी माना जाता है। सभी विलासिता देने वाला शुक्र ग्रह होता है जो जातक को सभी सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान करता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः तुला राशि के लग्न वाले जातकों को तुला राशि के स्वामी ग्रह शुक्र को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र ग्रह के लिये ओपल रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शुक्र राजा के सलाहकार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज दरबार में सलाहकार तुल्य अधिकार प्राप्त तथा उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने जीवन साथी का सहयोग भी प्राप्त होता है। शुक्र ग्रह यौन अंगों एवं यौन सुखों आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको यौन रोग हों या यौन सुख से संबंधित कष्ट हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

ओपल रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के कारण उसको ग्रहों का राजा माना जाता है। ओपल रत्न शुक्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शुक्रवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल शुक्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। शुक्रवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय शुक्र की होरा का होता है। ओपल को यदि शुक्रवार के साथ-साथ शुक्र के नक्षत्र अर्थात् भरणी, पूर्वाषाढा और पूर्वाषाढा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ओपल को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शुक्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

शुक्र का मंत्र - ॐ शुं शुक्राय नमः



इसको धारण करने के पश्चात यदि शुक्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चांदी, सफेद कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो ओपल रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी शुक्र का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या दुर्गा मां की पूजा-स्तुति तथा दुर्गा चालीसा का पाठ करें तो यह ओपल रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शुक्रवार को दुर्गा सप्तशती का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

तुला लग्न वाले जातक यदि ओपल रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।



चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहु ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की सादेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता है। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते हैं। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं।



हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मृत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता है। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव है। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता है। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता है।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्ठेश व तृतीयेश हैं। षष्ठेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखो की स्थिति उत्पन्न कर सकता है।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता है। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित है। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृत्ति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ सकती हैं।

मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। मंगल का रोग भाव में होने से आपके जीवन साथी से सुखों में न्यूनता, मित्रों से धोखा, संतान सुख में न्यूनता, स्वजनों से झगड़ा, रक्त-विकार, धन-नाश का कारण बन सकता है।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपत्ति का नाश हो सकता है। बुद्धि



विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षों के उपरान्त आपको कार्यों में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यों पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 03/06/2027-23/02/2028 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ॥

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगूठी में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा अंगूठी में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।



मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव उत्पन्न रहेगा। साथ ही मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित मात्रा में विलम्ब भी हो सकता है तथा यदा कदा विवाह संबंधी वार्तालापों में व्यवधान आएं परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही चतुर्थ भाव पर दृष्टि के कारण जीवन में आप भौतिक सुख संसाधन तथा जायदाद आदि भी प्राप्त करेंगे यद्यपि इसमें आपको थोड़ा परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव से वे तेज हो सकती है परन्तु इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा व्यवधानों एवं समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं अनुकूल बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाय। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा इच्छित भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी साथ ही चल एवं अचल सम्पत्ति के भी स्वामी बनेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं प्रसन्नता पूर्वक



व्यतीत होगा तथा धनऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

कालसर्प योग

अग्ने राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है ।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं ।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं ।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे ।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव में राहु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुण्डली में शनि और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुण्डली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा



पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 30 है। तीन एवं शून्य का योग तीन आपका मूलांक होता है। मूलांक तीन का स्वामी बृहस्पति ग्रह को माना गया है। शून्य शिव है, अखण्ड ब्रह्माण्ड का द्योतक है।

मूलांक तीन के स्वामी बृहस्पति के प्रभाव वश आप एक अनुशासन प्रिय तथा कठोर व्यक्ति के रूप में चर्चित रहेंगे। आपकी स्वयं अनुशासन में रहने की इच्छा रहेगी और यही अपेक्षा दूसरों से करेंगे। मातहतों के साथ आपकी कार्यशैली कठोर रहेगी। इससे आपको अधीनस्थों के विरोध, आलोचनाओं का शिकार होना पड़ेगा। आपका रुझान ज्ञान की ओर होने से आप विद्याध्यन के क्षेत्र में सफल रहेंगे। बौद्धिक स्तर के कार्य आप भलीभाँति संपादित करेंगे। कार्यों में आपकी मौलिकता झलकेगी। आपकी मुखिया बनने की महत्वाकांक्षा कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत रहेगी और दूसरों पर शासन करने में निपुण रहेंगे। धर्मक्षेत्र, कार्यक्षेत्र, समाजसेवा इत्यादि के कार्यों में आपको ख्याति प्राप्त होगी।

तर्क, ज्ञान शक्ति आपमें होने से आप मानसिक रूप से संतुलित रहेंगे तथा इसकी छया आपके कार्यों में दृष्टि गोचर होगी। आप सामाजिक भलाई के कार्यों में रुचि लेंगे एवं कभी-भी किसी का अहित नहीं करेंगे। शून्य प्रभाववश आप शान्त, कोमल हृदय के वाणी से मधुर, सच्चाई के रास्ते पर चलने वाले धर्म-कर्म के क्षेत्र में अग्रण्य व्यक्ति के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाले स्पष्ट वक्ता होंगे। आप स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाले यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाले शूरवीर व्यक्ति के रूप में पहचान स्थापित करेंगे। आपका जीवन चक्र एक राजा की भाँति संचालित होगा अर्थात् आप हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचार धारा पर निर्भीक चलेंगे। अहं या स्वाभिमान आपमें कूट-कूट कर भरा होगा।

आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, आपकी मेहनत से होगी। अधिकारों में वृद्धि होगी। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से आपका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। जीवनी शक्ति आप में अच्छी रहेगी। एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहेंगे। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से आप एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करेंगे। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से आपको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगेगा और ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगे, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

आपका मूलांक 3 है तथा भाग्यांक 1 है। मूलांक 3 का स्वामी गुरु है तथा भाग्यांक 1 का स्वामी सूर्य है। मूलांक 3 तथा भाग्यांक 1 के बीच सम संबंध हैं। इसके प्रभाववश आपके अंदर सूर्य एवं गुरु का प्रभाव उच्च कोटि का होगा। आप रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में अत्यधिक सफल व्यक्ति सिद्ध होंगे। आप ऐसा रोजगार पसंद करेंगे, जिसमें आपकी हुकूमत बनी रहे,



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

अर्थात् स्वतंत्र रूप से आप कार्य करना अधिक पसंद करेंगे। आपके रोजगार का क्षेत्र ऐसा रहेगा जिसमें दूसरों का भला और सामाजिक सुधार होता हो। आप स्वतंत्र रूप से रोजगार के क्षेत्र में अपने निर्णय लेंगे एवं निर्भीक चलते हुए नाम तथा धन प्राप्त करेंगे। अध्ययन-अध्यापन जैसे कार्य आपको विशेष पसंद आएंगे। जिस कार्य में मुखिया का पद प्राप्त हो, ऐसी आपकी महत्वाकांक्षा रहेगी। रोजगार में आप सच्चाई के मार्ग पर चलेंगे एवं दान-पुण्य भी करेंगे। आपके विरोधी परास्त होंगे और आपका कार्यक्षेत्र विशालता को प्राप्त करेगा।

आपका भाग्योदय 19 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 28 वर्ष की अवस्था पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 37 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

- 1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
- 3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
- 4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
- 6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
- 8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
- 9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं



घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

षष्ठभावे में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।



मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, कोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान्, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।



RATNA JYOTI[®]

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।



दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(31/01/2006 - 31/01/2026)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 31/01/2006 को आरम्भ होकर 31/01/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र नवम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है, और संगीत, नाटक और आनन्द का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का जबकि मीन राशि में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। नवम भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्म कुण्डली के तृतीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् तृतीय भाव विश्वास, भाग्य, धार्मिक तथा अध्यात्मिक आस्था, ध्यान, त्याग, दान, पिता, गुरु, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फल स्वरूप आपको कोई क्षति नहीं होगी तथा आप बिना किसी समस्या के एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आप अपने कर्म और पिता सहित गुरु जनों के आशीर्वाद से काफी धन एकत्र कर पाएँगे।

व्यवसाय :

शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आप अपने पारिवारिक व्यवसाय को जारी रखेंगे। आप भाग्यशाली हैं, आपको ख्याति मिलेगी, शिक्षा-प्रशिक्षण आपके पारिवारिक व्यवसाय को बड़े स्तर में ले जाने में सहायक होगा।

आप विदेश यात्रा कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

नवम भाव में स्थित शुक्र के फलस्वरूप आपके पिता दीर्घायु और समृद्धिशाली होंगे। आपकी दान-पुण्य के कार्यों में रुचि हो सकती है। आप अपने परिवार की परंपरा का निर्वाह करते हुए धनोपार्जन करेंगे। आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे। और परिवार को एकरूपता से प्रगति के पथ पर ले जाएंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके पदचिह्नों का अनुसरण करेंगे।



**अंतर्दशा :- शुक्र - शनि
(01/12/2018 - 31/01/2022)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 31/01/2006 को प्रारंभ हुई थी और वद 31/01/2026 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 01/12/2018 को प्रारंभ होकर 31/01/2022 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

तृतीय भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 5, 9, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप निर्दयी मगर साहसी हो सकते हैं। धनी बनेंगे, सरकार से सम्मान मिलेगा। बहुत सारे लोगों को संरक्षण प्रदान करेंगे। सफलता मिलेगी, मगर बाधाओं को पार करने के बाद। मन उदास या चिंतित रहेगा। वक्त गुज़रने पर सुधार आएगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी की अंगूठी में पूजा के उपरांत शनिवार के दिन रात्रिभोजन के बाद मध्यमा अंगुली में नीलम धारण करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - बुध
(31/01/2022 - 01/12/2024)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 31/01/2006 को प्रारंभ हुई थी और वद 31/01/2026 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 31/01/2022 जो आपके लिए 01/12/2024 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

द्वादश भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका मन व्यथित या भ्रमित रह सकता है। दार्शनिक स्वभाव हो सकता है। कार्य में दक्षता हासिल करने के बावजूद भ्रष्ट बुद्धि के कारण अप्रसन्न रह सकते हैं। विषय-वासनाओं में रुचि बढ़ सकती है; जीवनसाथी के अतिरिक्त व्यक्ति से आपके संबंध हो सकते हैं। सावधानी और मन पर नियंत्रण आवश्यक हैं। गलत मार्ग पर चलने से बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित रहते हैं। इनकी प्रवृत्ति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर दृश्यों एवं वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। स्वभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते हैं तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे समाज में ये सम्मानित प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध रहते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा अच्छे कार्यों से ये अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। नीति ज्ञान में ये चतुर होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व प्राप्त हो जाता है परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपकी प्रवृत्ति हास्यप्रिय होगी तथा गम्भीरता आपको विशेष अच्छी नहीं लगेगी। बच्चों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा। साथ ही कला से आपका भावनात्मक सम्बन्ध रहेगा।

आप सभी लोगों से समानता का व्यवहार करेंगे तथा आपके मन में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहेगा अपने कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप किसी नवीन सिद्धांत या ग्रन्थ आदि की भी रचना कर सकते हैं जिससे आपको यश की प्राप्ति होगी।

लग्न में लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। आपकी प्रवृत्ति विलासी होगी तथा भौतिकता के प्रति अत्यधिक आकर्षण रहेगा जिससे आपकी प्रवृत्ति काफी व्ययशील होगी। आपकी प्रवृत्ति भ्रमण प्रिय होगी तथा यात्रा आदि भी समय समय पर सम्पन्न करते रहेंगे। कला एवं संगीत में आप निपुण होंगे तथा कार्य करने में अत्यंत ही दक्ष होंगे।

आप में सहनशीलता का भाव विद्यमान होगा तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको समय समय पर धनार्जन होता रहेगा। आप में शारीरिक बल की भी प्रचुरता रहेगी फलतः परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करके आप जीवन में मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगे जिससे समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कृत्यों को नियमपूर्वक सम्पन्न करेंगे। जिससे आपको मानसिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के

मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा ।



RATNA JYOTI[®]

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न तथा धातुओं को आप अपनी योग्यता तथा लगन से अर्जित करने में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी रुचि जायदाद या भूमि संबंधी कय विक्रय या सम्बन्धित कार्यों में रहेगी जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा परिवार के सहयोग से जीवन में इच्छित उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। लेकिन आपात्काल में स्वयं को व्यवस्थित करने में असुविधा की अनुभूति करेंगे।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा कार्यों में आप सतत यत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक शान्ति एवं सुख संसाधनों पर काफी व्यय करेंगे जिससे वे लोग सन्तुष्ट रह सकें। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को तर्क पूर्ण वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसे लोग सहमत भी रहेंगे। मिष्टान के आप प्रिय रहेंगे तथा इसके भक्षण से आपको किंचित प्रसन्नता प्राप्त होगी लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकते हैं इसके अतिरिक्त धार्मिक परम्पराओं का आप पूर्ण पालन करेंगे तथा शुभ एवं मंगल कार्य भी समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरुषों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव रहेगा।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय तृतीय भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को काफी समय तक याद रखने में समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका आपको वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही वे आपके प्रति कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे। आप भी पारिवारिक शान्ति के लिए उनकी गलतियों को क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांत के भी पक्के होंगे चाहे इससे आपको कोई परेशानी या समस्याएं ही उत्पन्न क्यों न हों। इसके अतिरिक्त आप एक स्पष्टवादी व्यक्ति होंगे तथा जिसे सही समझेंगे उसे सबके समक्ष कह देंगे चाहे उसका प्रभाव कुछ भी हो।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे तथा नेतृत्व के गुणों से भी युक्त रहेंगे। साथ ही किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर ही उसको बारे में अपने राय प्रदान करेंगे। आप सद्विचारों के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक विचारों की भी प्रधानता रहेगी। आधुनिक संचार संसाधनों से आप युक्त रहेंगे यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा यदा कदा इसमें भी अपना समय व्यतीत करेंगे। आपकी समीपस्थ या दूर देशों की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। आपकी अध्ययन के प्रति रुचि रहेगी तथा धार्मिक ग्रन्थ, साहित्य तथा वैज्ञानिक पुस्तकों का आप रुचिपूर्वक अध्ययन करेंगे इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था के पदाधिकारी एवं दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगे जिससे समाज में सम्माननीय समझे जाएंगे।



शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे। आपको आधुनिक सुख-संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आदरणीय व्यक्ति माने जायेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसके स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। विवाह के बाद पत्नी के प्रभाव या सहयोग से भी आपको वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको समय समय पर धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहेगी। आप चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होंगे। अतः इन पर आप इच्छित निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। आप भी व्यक्तिगत रूप से इसके आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होंगे। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगे तथा इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, शिक्षित, बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों का मर्जी से लालन पालन करेंगी जिससे सभी लोग उनको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी उन्नति में भी उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगे तथा सुख-दुःख में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में आपकी प्रारंभ से ही रुचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक लेकर परीक्षाएं उत्तीर्ण करेंगे। स्नातक परीक्षा भी आप संतोष जनक रूप से उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में उत्साह के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य में भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए स्वयं को तैयार करेंगे। स्वजनों एवं संबंधियों से भी आप वांछित आदर, स्नेह एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।



प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुंभ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। तथा राहु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपनी बुद्धिमता से समस्त सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा उनमें आपको वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। लेकिन राहु के प्रभाव से आप में अवसरानुकूल शीघ्र सटीक निर्णय लेने की क्षमता अल्प होगी जिससे यदा-कदा अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विषयों, विज्ञान एवं पाश्चात्य भाषा में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा यत्नपूर्वक उनके ज्ञानार्जन में रुचिशील होंगे तथा एक विद्वान के रूप में अपनी स्थिति स्थापित करने में समर्थ होंगे।

राहु की पंचम भावास्थ स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रुचि होगी तथा मनोरंजन एवं दिल बहलाव के लिए आप ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करेंगे। लेकिन आपको इन प्रेम-प्रसंगों में मर्यादा एवं नैतिकता का विशेष ध्यान रखना चाहिए अन्यथा इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। वैसे आप प्रेम सम्बन्धों में आदर्शवादिता का भी प्रदर्शन कर सकते हैं।

संतति भाव में राहु के प्रभाव से आपको पुत्र संतति की प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति तेजस्वी, पराक्रमी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेगी। माता-पिता के प्रति उनके मन में सामान्य आदर का भाव होगा परन्तु वे अपने ही मन की करने वाले होंगे। अतः यदा-कदा माता-पिता की आज्ञा की अवहेलना भी कर सकते हैं। वे अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को भी स्वेच्छा से ही करेंगे तथा इसमें माता-पिता की सलाह कम ही लेंगे। लेकिन आपको इसकी चिन्ता कम ही करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देना चाहिए इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपकी उपेक्षा कर सकते हैं ऐसी स्थिति में अपने लिए वांछित धन अर्जित करके रखना चाहिए जिससे अनावश्यक परेशानियों का सामना न करना पड़े।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति सामान्य रूप से उन्नति शील होगी तथा परिश्रम पूर्वक वे सफलताएं अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप भी उनकी शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। आपके बच्चे तेजस्वी एवं पराक्रमी होंगे तथा यदा-कदा अन्य जनों से वे वाद-विवाद भी कर सकते हैं। इससे आपके लिए यद्यपि अनावश्यक परेशानी होगी परन्तु अपने सद्व्यवहार से आप स्थिति संभालने में समर्थ होंगे। इस प्रकार संतति से सुख आपके लिए सामान्य ही होगा।



रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आप को जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही आपके शत्रु भी सामाजिक मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। जिससे समाज में आपके प्रभाव में अल्पता आएगी। आपके सेवक आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे लेकिन यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगे तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते हैं अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगे परन्तु इसमें हानि की अवस्था में आपको ऋण आदि लेना पड़ सकता है लेकिन आपको कर्ज देने वाले विशेष सहयोग नहीं देंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके सम्मान को प्रभावित करेंगे। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश आदि के कार्यों में आपको अत्यधिक बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए। इसके साथ ही अवसरानुकूल बन्धुवर्ग या संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते हैं। अतः ऐसे समय में स्थिति को पूर्ण समझकर ही कार्य करने चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक, जमीन जायदाद या कुछ फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता के भाव में न्यूनता आ सकती है। मामा मामियों से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा परस्पर विशेष सहयोग के भाव में न्यूनता रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब कभी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यों के द्वारा शान्ति एवं सफलता अर्जित करने की सोचेंगे इसमें या तो पूजा संबन्धी कार्य हो सकता है अन्यथा आप अपने कठोर कार्यों से प्रतिशोध की भावना से पूर्ण करेंगे जिससे आपको न्यूनाधिक रूप से लाभ एवं उपलब्धियां अर्जित हो सकती हैं।



परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी उत्साही पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है। शुक्र के प्रभाव से वह आधुनिक विचार धाराओं से युक्त सुन्दर एवं कला प्रेमी होता है एवं स्वभाव में भी विनम्रता एवं सुशीलता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी विनम्र स्वभाव की महिला होंगी आधुनिकता के भावों की उनमें प्रबलता होगी तथा भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की प्रति विशेष रुचि होगी। अपने संभाषण में वह मधुर शब्दों का उपयोग करेंगी। शुक्र के प्रभाव से उनके कर्तव्य परायणता भी होगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर एवं आकर्षक वर्ण की दर्शनीय महिला होंगी तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा शरीर के अंग प्रत्यंगों की पुष्टता के कारण सौन्दर्य में आकर्षण की वृद्धि होगी तथा उनके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा साथ ही सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का मुक्त रूप से उपयोग करेंगी एवं सुंदर तथा आकर्षक परिधानों से सुसज्जित होंगी संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह किसी समीपी महिला संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रबल आकर्षण तथा प्रेम की भावना रहेगी। सांसारिक महत्व के कार्यों को परस्पर सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे समानता तथा विश्वसनीयता के भाव में वृद्धि होगी। आप दोनों शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा जीवन में सिद्धांतों में भी समानता रहेगी फलतः आपसी संबंधों में मधुरता के कारण जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका ससुराल किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से भी उनकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण स्नेह की प्राप्ति होगी। आप भी उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा का भाव रहेगा एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मधुर वाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा उनसे वांछित सम्मान मिलेगा जिससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी। यदि स्त्री या स्त्रीवर्ग से साझेदारी की जाये तो आपको विशिष्ट उपलब्धियां मिलेंगी तथा आपस में विश्वसनीयता का भाव भी बना रहेगा।



आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की सदैव प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से भी युक्त रहेंगे अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगे। ज्यौतिष आदि के क्षेत्र में आप काफी उन्नति एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इसमें आपको ख्याति भी प्राप्त होगी। आपको मित्र या बन्धु वर्ग के द्वारा जायदाद संबन्धी लाभ का योग बनता है। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी न्यूनाधिक रूप से आपको अवश्य प्राप्त होगी। जायदाद एवं चल अचल सम्पत्ति के स्वामित्व के द्वारा समाज से आपको इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप एक वैभवशाली पुरुष के रूप में जाने जाएंगे।

विवाह आदि के समय आपको आवश्यक मात्रा में धन या उपहार आदि की प्राप्ति होगी तथा अपेक्षानुसार आपके ससुराल पक्ष के लोग आपको ये सब भेंट करेंगे। साथ ही आप आवास को सुंदर सजावट से युक्त रखेंगे तथा समय पर पार्टियों का भी आयोजन करते रहेंगे। बीमा आदि से भी समय समय पर लाभ होगा अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपके घर में चोरी की कोई बड़ी घटना नहीं होगी परन्तु सामान्यतया इन घटनाओं से कोई परेशानी नहीं होगी। आपकी सतर्कता की प्रवृत्ति से जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी तथापि आपको तीव्र गति का वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे।



RATNA JYOTI[®]

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक नियमों का पालन करते रहेंगे। जीवन में आप भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहेंगे। आपकी ईश्वर की सत्ता में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा भाग्य बल से जीवन में धनऐश्वर्य अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे तथा आप एक धर्मनिष्ठ पुरुष के रूप में जाने जाएंगे।

विभिन्न धर्मों के ऊपर लिखे गए ग्रंथों का आप रुचिपूर्वक अध्ययन करेंगे। साथ ही ध्यान योग, तंत्र तथा अध्यात्म आदि के प्रति भी आपका विश्वास रहेगा तथा इनसे संबंधित विषयों का भी समय समय पर अध्ययन करके ज्ञानार्जन करते रहेंगे। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सकें तो इससे आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति में वृद्धि होगी तथा पूर्वाभास एवं भविष्य वाणी करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने में शक्ति प्रदान करेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक असुन्तल के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान आएंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इससे आप में स्थायित्व आएगा तथा धन वैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान एवं विद्वान पुरुष होंगे तथा अपनी योजनाएं बिना किसी की सलाह लिए सम्पन्न करेंगे। साथ ही अपने प्रथम पौत्र से अत्यधिक सुख एवं आनंद प्राप्त करेंगे तथा जीवन में अन्य शुभ कार्य भी आप करते रहेंगे एवं सुख ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा सौभाग्यशाली अतिथि सत्कार करने वाले तथा दीनों पर कृपा करने वाले व्यक्ति होंगे तथा परोपकार संबंधी कार्यों को पूर्ण करने में सफल रहेंगे।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्र है। कर्क राशि जलतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने के इच्छुक होंगे एवं ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आप को लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। साथ ही आप मानसिक रूप से भी सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थों यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली का व्यापार, मिट्टी के खिलौने, ईट, वालू आदि के कार्य, वास्तुकला, आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, द्रव्य पदार्थों यथा दूध, दही, घी आदि के कार्य से लाभ होगा। साथ ही रेशमी एवं मूल्यवान वस्त्रों के व्यापार या आयात निर्यात से भी इच्छित उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार आरंभ करें। इससे आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा लाभ स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक या शैक्षणिक संस्था के पदाधिकारी भी हो सकते हैं जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पिता बुद्धिमान, शिक्षित तथा मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनकी प्रवृत्ति भी शान्ति प्रिय होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं सभी लोग उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा का वे समुचित व्यवस्था करेंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से आपको इसमें यथोचित सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक रूप से समानता होगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे और आर्थिक दृष्टि से आपका धनार्जन उत्तम रहेगा। आप एक परम महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई इच्छाएं एवं उमंगें विद्यमान रहेगी। साथ ही सौभाग्य के बल पर इनको पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे। आप सरकार, औषधविज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में विशेष रूप से लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्हीं के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। इस प्रकार लाभ की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में पूर्ण लाभ सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा वे हमेशा आपको अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आपको मान सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही वे सभी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आप एक सामाजिक प्राणी होंगे तथा समूह में मनोरंजन या अन्य कार्य करना आपके लिए आनन्ददायक रहेगा साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करने के कार्यों में भी तत्पर रहेंगे एवं जीवन में विशिष्ट मान सम्मान एवं ख्याति भी प्राप्त कर सकते हैं। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथापि यदा कदा गर्मी या पित्त आदि से उत्पन्न दोषों से किंचित अस्वस्थता की अनुभूति कर सकते हैं। लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आप समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपने समय को व्यतीत करेंगे।



विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं समृद्ध रहेंगे। साथ ही जीवन में प्रचुर मात्रा में अनेक साधनों से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। लेकिन आपका रहन सहन, खान पान उच्च स्तर का रहेगा फलतः बचत अल्प मात्रा में ही होगी तथा व्ययाधिक्य रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों पर व्यय करेंगे साथ ही वस्त्रादि भी सुंदर एवं कीमती होंगे तथा कीमती वस्त्र पहनकर समाज में अपनी धन सम्पन्नता को प्रदर्शित करेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुंदर एवं सुसज्जित रहेगा एवं इसकी साज सज्जा पर आप काफी व्यय करेंगे। वास्तव में आप कलात्मक रूप से रहना पसन्द करते हैं तथा इसके लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता रहती है। सुंदर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपकी तीव्र रुचि रहेगी तथा इनको प्राप्त करने के लिए आप कितना भी व्यय क्यों न हो करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ महंगे होटलों में खाना या नाश्ता करना भी आपका शौक रहेगा। आपकी सफलता को देखकर आपके शत्रु आपके लिए रूकावटें उत्पन्न करेंगे। अतः कभी कभी मानसिक रूप से तनावग्रस्त भी रहेंगे।

यात्रा करने के लिए आप रुचिशील रहेंगे। साथ ही आप की देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होंगी इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा यद्यपि इनमें व्यय भी अधिक होगा परन्तु कुछ समय के उपरांत लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न करेंगे। इसके साथ ही विदेश में भी आप काफी समय तक प्रवास कर सकते हैं।



वार्षिक फलादेश - 2019

इस वर्ष शनि धनु राशि में तृतीय भाव में रहेंगे। 23 मार्च को राहु मिथुन राशि में नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 मार्च को गुरु धनु राशि में तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 23 अप्रैल को वृश्चिक राशि में द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गशी होकर 05 नवम्बर को धनु राशि में तृतीय भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा फल दायक रहेगा। वर्षारंभ में आपको अकस्मात लाभ होने की प्रबल संभावना है। व्यापारी वर्ग को इस वर्ष अधिक से अधिक पूंजी निवेश करके व्यापार को बढ़ाना चाहिए जिससे उनको आने वाले समय में अधिक से अधिक लाभ हो सके।

जो लोग अपने स्थानान्तरण का इंतजार कर रहे हैं मार्च के बाद उनका अपनी मनचाही जगह पर स्थानान्तरण हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे अपने कार्य स्थल पर मान सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़िया रहेगा। द्वितीय स्थान का गुरु धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। जिससे आप इच्छित बचत करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। अष्टम स्थान पर गुरु की दृष्टि से पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने के योग बन रहे हैं।

परिवार में मांगलिक कार्योंपर खर्च हो सकता है। यदि आपका पैसा कहीं फसा है तो वो भी मिल जाएगा। परिवार में किसी बड़े सदस्य या अपने मातुल पक्ष से भी आपको धन लाभ हो सकता है। निवेश के लिए यह समय अच्छा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान में गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको अपने पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

आपके मामा के साथ आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। 23 मार्च के बाद समय और भी अनुकूल हो जाएगा। तृतीय स्थान का शनि आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि प्रदान करेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। शिक्षा के प्रति इनका रुझान बढ़ेगा। अपनी मेहनत व परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। यदि विवाह के योग्य है तो इनका विवाह संस्कार भी हो सकता है।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

23 मार्च के बाद पंचम स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण संतानोत्पत्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। इनका स्वास्थ्य व शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समय अपनी संतान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

इसवर्ष आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपकी कार्य क्षमताओं व रोग प्रतिरोधक शक्तियों का विकास होगा। पारिवारिक जीवन की प्रसन्नता भी आपको तनाव मुक्त व स्वस्थ रखेगी।

रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए योग ध्यानादि क्रियाओं में रुचि लें व सात्विक आहार करें तथा प्रातः सूर्योदय से पहले उठने का अभ्यास करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह सफलतादायक सिद्ध होगा। यह वर्ष रोजगार प्राप्ति का शुभ समाचार लेकर आ रहा है। तकनीकी शिक्षा प्राप्ति के इच्छुक विद्यार्थियों को विदेश जाने का अवसर प्राप्त होगा।

तकनीकी शिक्षा, प्रौद्योगिकी आदि के क्षेत्र में शिक्षा देने वाले बेहतर शैक्षणिक संस्थान में दाखिला मिलने की संभावनाएं बनी हुई हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। 29 मार्च से 23 अप्रैल के बीच व्यवसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्रा होगी। द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बनाए हुए है।

23 मार्च के बाद आप कोई लम्बी यात्रा करेंगे परन्तु इस यात्रा के दौरान आपको शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आपके मन में धर्म के प्रति रुचि बढ़ेगी और आप धार्मिक कार्य सम्पन्न करेंगे। शिव पूजा आपके लिए सभी प्रकार से कल्याणकारी सिद्ध होगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।(तांबे की लोटे में लाल चावल डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।)
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने घी का दीपक जलाएं और लक्ष्मी के मन्त्र का पाठ करें।



मासिक फलादेश

जनवरी 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम तथा शुभ फल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा नाना प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज एवं समाजिक जनों से आप यथोचित आदर तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूजा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी। साथ ही अन्य लोगों के परोपकार संबंधी कार्यों को भी आप सम्पन्न करेंगे। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आश्रय प्राप्त करके समाज में यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। इस महीने में बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उनको सहयोग तथा सुख प्रदान करेंगे इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को पूर्ण करने में भी आप सफलता अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी सुख प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि में भी सद्विचारों की वृद्धि होगी। विविध प्रकार के सुखों का आप इस समय उपभोग कर सकेंगे। इसके अलावा धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने में भी आप सफल हो सकेंगे। इस प्रकार यह मास आपका शान्ति एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

फरवरी 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से शुभाशुभ फल प्रदान करेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में आप दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु वर्ग से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी एवं इसमें अशान्ति रहेगी। पारिवारिक जनों से भी आपके संबंधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा आपस में अनबन रहेगी। आपके कार्य क्षेत्र में इस समय शिथिलता आएगी तथा स्थान परिवर्तन का योग भी बन सकता है। आप इस समय अपने किसी कार्य को छोड़ भी सकते हैं। सामाजिक जनों से भी आपके संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा परस्पर विवाद आदि भी होते रहेंगे फलतः आपके सम्मान में न्यूनता का भाव आएगा। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन हानि की भी संभावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सुख अर्जित करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा यत्न पूर्वक आप धार्मिक कार्य करने के लिए प्रवृत्त रहेंगे। साथ ही अन्य कई प्रकार के शुभ फल भी इस समय घटित हो सकेंगे। अतः मास शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रहेगा।



मार्च 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल प्रद ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता बनी रहेगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप बुद्धि बल से ही सम्पन्न करेंगे। इस मास आप पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। आपके प्रभुत्व की इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग हृदय से आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके कई शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ एवं महत्वपूर्ण समाचार की प्राप्ति भी होगी। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना पैदा होगी एवं आप श्रद्धा पूर्वक इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्च अधिकारी वर्ग से भी आप अनुकूल एवं वांछित लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से भी मुक्ति मिलेगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे जिसके प्रभाव से आप गर्मी या पितादि दोषों से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे एवं रक्त विकार होने की भी संभावना रहेगी। अतः इस मास में आपको शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सजग रहना चाहिए।

अप्रैल 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा इस समय आप शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास आपका शत्रुपक्ष बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे फलतः मानसिक रूप से आप उद्विग्न तथा अशान्त रहेंगे। इस समय आपके घर में चोरी होने की भी सम्भावना रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें एवं उन्हें उचित सहयोग प्रदान करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित हो सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अल्प मात्रा में ही सफल होंगे अन्यथा आपको असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। साथ ही धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आर्थिक संकट भी न्यूनाधिक मात्रा में रहेगा। आपके द्वारा इस मास कोई ऐसा भी कार्य हो सकता है जिसके लिए आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इस मास आपके सम्बन्धियों तथा मित्रों से तनावपूर्ण संबन्ध रहेंगे एवं मधुरता का अभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज से भी आपको उपेक्षा मिलेगी तथा आशाएं भी अल्पमात्रा में पूर्ण होंगी।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में शुभ फल भी घटित होंगे जिसके प्रभाव से आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे जिससे मानसिक प्रसन्नता तथा शान्ति की अनुभूति होगी।

मई 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में



प्राप्त होंगे। इस समय आप स्त्री एवं बन्धुवर्ग से कष्ट की प्राप्ति करेंगे तथा शत्रुपक्ष से भी आपको भय तथा चिन्ता बनी रहेगी जिससे आप मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। साथ ही आप में उत्साह के भाव की भी अल्पता रहेगी तथा धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक संकट भी बना रहेगा। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे एवं मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। अपने मित्र एवं बन्धुजनों से भी आपका परस्पर मनमुटाव रहेगा तथा ऐसे समय पर मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आप आन्तरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक या बन्धुजनों से भी वादविवाद आदि की भी सम्भावना बनी रहेगी। अतः आपका यह समय कष्टपूर्वक ही व्यतीत होगा।

साथ ही इस समय आप वायु से उत्पन्न होने वाले रोगों से अस्वस्थ रहेंगे तथा जाने या अनजाने में किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़े। इससे आपकी समाजिक अवमानना भी होगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप अग्नि के द्वारा न्यूनाधिक मात्रा में धन हानि भी प्राप्त करेंगे। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

जून 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए समान्यता अशुभ रहेगा। इस समय आपको शत्रुओं से भय बना रहेगा तथा मन में चिन्ता व्याप्त रहेगी साथ ही आपके घर में किसी प्रकार से चोरी आदि भी हो सकती है। इस समय आप अनावश्यक रूप से धन व्यय करेंगे एवं धर्म के प्रति भी आपके मन की श्रद्धा में अल्पता आएगी। आपका स्वास्थ्य भी इस मास में अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर आप शारीरिक व्याकुलता प्राप्त करेंगे परिणामतः आपके शारीरिक बल में भी न्यूनता आएगी तथा आपको दुर्बलता का आभास होगा। इसके साथ ही इस मास आप दूर की यात्रा भी कर सकते हैं। अपने सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में आप प्रायः असफल ही रहेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से भी शिथिल होंगे।

साथ ही इस मास में आप वायु से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी जाने अनजाने सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में मान हानि हो सकती है। इसके साथ ही आग के द्वारा भी आपको किसी प्रकार से हानि हो सकती है। अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

जुलाई 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण रूपेण शुभ फल दायक रहेगा। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। फलतः आप किसी सम्माननीय पद को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे। धनार्जन इस समय प्रचुर मात्रा में होगा तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको धन लाभ हो सकेगा। इस मास आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न होने की सम्भावना रहेगी। साथ ही स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी।



तथा यत्नपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। समाज में इस समय आपकी यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा अधिकांश रूप से भाग्योदय सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे। इस मास आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे। इस प्रकार आप सर्वत्र मानप्रतिष्ठा अर्जित करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

साथ ही इस समय गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा एवं नवीन वस्त्रों या अन्य द्रव्यों को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे एवं आनंदपूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

अगस्त 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में अर्जित करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र, नौकरी या व्यापार में उन्नति होगी तथा समाजिक क्षेत्र में यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा वे सभी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा परस्पर आपको उचित सहयोग मिलता रहेगा। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे जो काफी समय से रुके हुए थे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा इनकी पूजा तथा सेवा करने में भी आप तत्पर रहेंगे। सन्तति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धुबान्धवों में भी आदर एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। साथ ही आप अपनी असफल आशाओं में भी इस समय सफलता अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त मानसिक रूप से भी आप पूर्ण शान्त एवं प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी होंगे अतः आप गर्मी या पित्त दोष से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है। अतः सावधानी पूर्वक अपने समय को व्यतीत करें एवं शारीरिक सुरक्षा का विशेष ध्यान रखें।

सितम्बर 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण शुभ तथा प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय स्त्री वर्ग से आप लाभार्जन करेंगे तथा सौभाग्य से युक्त रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा ज्ञानार्जन में भी आपकी रुचि रहेगी जिसमें आप सफलता अर्जित करेंगे। आप मन से भी इस समय शान्त एवं प्रसन्न रहेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगे तथा अन्य वांछित पदार्थों की भी आपको प्राप्ति होगी। संतति पक्ष से भी आप सुखार्जन करेंगे एवं सम्बन्धियों के मध्य मानप्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस समय में सम्पन्न होंगे तथा आप प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा अन्य पारिवारिक जनों से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा तथा धन लाभ प्रचुर



मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा सुख पूर्वक समय व्यतीत करके समाज में पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करेंगे।

अक्तूबर 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपका मध्यम रूप से व्यतीत होगा तथा आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आपका व्याधिक्य रहेगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी करेंगे फलतः समाज में आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे एवं मन में अशान्ति का भाव भी विद्यमान रहेगा। अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए आपको अत्यधिक परिश्रम एवं पराक्रम प्रदर्शित करना पड़ेगा फिर भी सफलता अल्प मात्रा में ही मिलेगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक रहेगा साथ ही मित्रों एवं सम्बन्धियों के साथ परस्पर संबंधों में तनाव रहेगा आपके कार्यक्षेत्र में भी इस समय व्यवधान उत्पन्न होगा एवं शत्रुपक्ष से भी चिन्ता तथा भय नित्य बना रहेगा। इसके अतिरिक्त मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की भी वृद्धि होगी तथा अन्य प्रकार से भी आप सुखानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करेंगे।

नवम्बर 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन से भी आप शान्त एवं सन्तुष्ट रहेंगे साथ ही आपके पराक्रम में अभिवृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग आपसे चिन्तित, भयभीत एवं पराजित होंगे। आपके लाभमार्ग इस समय प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति में सुदृढता होगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आप लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास आपके भाग्योदय सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे साथ ही कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी आप काफी समय से प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे सुख भी प्राप्त करेंगे। सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में आप पूर्ण समर्थ रहेंगे तथा अपने उच्चाधिकारियों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में भी आप सफल रहेंगे जिससे आपके सम्मान में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा उचित लाभ एवं सुख प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। इस मास में धर्मानुपालन में भी आप प्रवृत्त रहेंगे तथा समाज में पूर्ण मान प्रतिष्ठा अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।



दिसम्बर 2019 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे इस समय आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आप यथोचित आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे तथा स्वयं भी उनको अपना वांछित सहयोग प्रदान करेंगे। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग का आपको पूर्ण संरक्षण तथा आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उचित लाभ एवं सहायता प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही इस महीने में आप मिष्ठान का भक्षण अधिक मात्रा में करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न एवं शान्त रहेंगे। साथ ही शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा वे आपसे चिन्तित एवं भय की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्य के द्वारा भी आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप अपने श्रेष्ठ जनों या उच्चाधिकारियों से सहयोग प्राप्त करेंगे जिससे आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति या विस्तार होने की सम्भवाना बढ़ेगी। इस समय आप दूर समीप की यात्रा भी कर सकते हैं तथा नवीन वस्तुओं या वस्त्रों आदि की भी आपको प्राप्ति हो सकेगी।



वार्षिक फलादेश - 2020

इस वर्ष शनि 24 जनवरी को मकर राशि में चतुर्थ भाव में प्रवेश रहेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में राहु मिथुन में नवम भाव में होंगे और 19 सितम्बर के बाद वृष राशि में अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 30 मार्च को गुरु मकर राशि में चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे एवं वक्री होकर 30 जून को धनु राशि में तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 20 नवम्बर को मकर राशि में चतुर्थ भाव में आजाएंगे। 31 मई से 8 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। दशम भाव पर शनि की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में साधारण परेशानी हो सकती है जिससे आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। 30 मार्च से जून पर्यन्तदशम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

29 जून के बाद फिर से समय सामान्य हो जाएगा। इस समय बड़ा व्यापार प्रारम्भ न करें। यदि करना जरूरी हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य फलदायक रहेगा। वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। जिससे पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर परिवार में मांगलिक कार्य में धन खर्च होगा। 30 मार्च से जून पर्यन्तचतुर्थ स्थान में गुरु एवं शनि का युति प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सामान्ययोग बन रहा है।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष आपकी पारिवारिक स्थिति के लिए उतार चढ़ाव वाला रहेगा। परिवार में किसी बड़े व्यक्ति से वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। 30 मार्च से जून पर्यन्तचतुर्थ स्थान में गुरु एवं शनि की युति प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल हो जाएगा।

29 मार्च के बाद परिवार में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। परन्तु उस समय के अंतराल आपको सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।



पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि बच्चोंके स्वास्थ्य के लिए कुछ चिन्ताकारक है। यदि आपकी द्वितीय संतान विवाह के योग्य है तो उनका विवाह संस्कार हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष उतार-चढ़ाव वाला रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु की संयुक्त दृष्टि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर दर्द एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है।

स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप आयुर्वेद जड़ी-बूटी और योगाभ्यास आदि का सहारा लें तो जल्दी लाभ मिलेगा। सूर्योदय से पहले उठ कर सैर करना लाभ प्रद रहेगा। 19 सितम्बर के बाद स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य अनुकूल रहेगा। यदि आप नौकरी पाने के लिए या किसी बड़े संस्थान में प्रवेश पाने के लिए किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी।

अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष यात्राएं काफी होंगी परन्तु यात्रा के दौरान स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक रहेगा। आप तीर्थ यात्रा पर निकलेंगे।

30 मार्च के बाद विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। नवम स्थान का राहु धार्मिक कार्यों में व्यवधान डाल रहे हैं। मन की एकाग्रता के लिए दुर्गा पूजा करें।

- सूर्योदय से पहले उठ कर प्रत्येक दिन को सूर्य को जल दे।
- काली वस्तुओं का दान करें एवं ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच अपने गले में धारण करें।
- दुर्गा कवच का नियमित रूप से नित्य प्रति पाठ करें।



योग

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः ।
सुखभोगभाग्यदृढ्यात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/ श्लोक 57, 63 ॥

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः ।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम् ।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात् ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6 ॥ श्लोक 57,69 ॥

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेश दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षित हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,बुध

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

अचल लक्ष्मी योग

चन्द्रेण मङ्गलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत् ।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुंचति ॥



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

॥ मानसागरी ॥ अ. 4/श्लोक 8 ॥

यदि जन्मकुंडली में मंगल के साथ चंद्रमा चाहे जिस भाव में हो जातक के पास सदैव लक्ष्मी निवास करती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल

योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके पास सदैव धन रहेगा। आपके घर में स्थिर लक्ष्मी निवास करेगी।

भातृवृद्धि योग

भातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।

भावे वा बलसंपूर्णे भातृणां वर्धनं भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो. -16 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,शुक्र,मंगल

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-41 ॥

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांघादियुते विशेषात् ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-47 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांघंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।

वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-35 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र, बुध, मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं

मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 12/श्लो.-8 ॥

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

एक पुत्र योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ.- 295 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे ।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम् ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है ।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा । ऐसा प्रतीत होता है ।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे ।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम् ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है ।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपको मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी । ऐसा प्रतीत होता है ।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराशयंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है ।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे । ऐसा प्रतीत होता है ।



वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होता है ।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होंगे । ऐसा प्रतीत होता है ।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादश भाव से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है ।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे । ऐसा प्रतीत होता है ।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं ।

योग कारक ग्रह : चंद्र, मंगल

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं । ऐसा प्रतीत होता है ।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-६/श्लो.-१५ ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : १२ में १

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-६/श्लो.-३१ ॥

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : १७२ में १

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभागभवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-६/श्लो.-४० ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र, बुध

योग की संभावना : २ में १

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

द्विभार्या योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ. 302-3 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश और द्वितीयेश शुक्र के साथ अथवा पाप ग्रह के साथ होकर 6/8/12 वें भाव में हों तो एक स्त्री की मृत्यु के पश्चात् द्वितीय विवाह होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,शनि,राहु

योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप एक जीवनसाथी की मृत्यु के उपरांत दूसरा विवाह संभाव्य है।

देवतुल्य अति दीर्घायु योग

न च केन्द्रगताः पापा न त्रिकोणे न नैधने ।

तस्यायुरमरप्रख्यं निश्चयेन च कीर्त्यते ॥

॥ सारावली ॥ अ.10/श्लो.-97 ॥

यदि जन्मपत्रिका में केन्द्र त्रिकोण या अष्टम भाव में पाप ग्रह न हों तो जातक की देवतुल्य आयु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मोक्ष योग

व्ययस्थानगते सौम्ये तदीशे स्वोच्चराशिगे ।

शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे मोक्षः स्यान्नात्र संशयः ॥

॥ बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ॥ अ.12/श्लो.-

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में बुध हो, व्ययेश अपनी उच्च राशि में हो, शुभ ग्रह से युक्त और दृष्ट हो तो मोक्ष होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,गुरु

योग की संभावना : 288 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मोक्ष प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।



RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: <https://www.ratnajyoti.com/>

गजकेसरी योग

”केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति ।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात् ।।”

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है ।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे ।

पारिजात योग

”सपारिजातद्युचरः सुखानि ।”

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के “पारिजात” भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है ।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “पारिजात” वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा ।

उत्तमवर्ग योग

”नीरोगतामुत्तमवर्गयातः ।”

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है ।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे ।

गोपुरांश योग

”सगोपुरांशो यदि गोधनानि ”

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।



Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

जिस जातक की पत्रिका में “गोपुरांश” भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध, राहु

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में “गोपुरांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वेशि योग

”धनखेटैर्वेशी दिनेशात्”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ॥

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध, सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वेशि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।

